भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902
डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 9 | अंक 11 | उदयपुर शनिवार 15 जून 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

कंघी-कंकतक-कांघसी

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

शिल्प वे जो हमारे काम आए। दैनिक जीवन से लेकर अवसर विशेष पर भी उपयोगी हों। हमारे सिर के केशों को संवारने के लिए कंघा या कंघी बड़ी उपयोगी है। केशों से लघाव रखने वाले लोग जेब या पर्स में भी कंघी रखते हैं। कई बुजुर्ग भी। आजकल तो तरह-तरह के कंघे बाजार में मौजूद हैं। मगर, एक दौर वह भी था जबकि ग्वारिया अथवा गवारिया समुदाय वाले स्त्री-पुरुष कलात्मक कंघों का निर्माण करते थे। हाट में ये बिकने आते थे, मेलों में बिकते थे। महिलाएं केश संवारकर अपनी बांदनवाल में इनको सहेजकर रखती थी। 'गम गियौ कांघसियो...' जैसे लोकगीतों में कांघसी के प्रति नारी मन का लगाव मिलता है। प्राय: अपनी कांघसी अन्य किसी को नहीं दी जाती है। उसको ठुकराया नहीं जाता। दांतक टूट जाने पर नदी में बहा दिया जाता है।

संस्कृत में कंघे को कंकत या कंकतक कहा जाता है। ये जानवरों के सींग पर आरी चलाकर बहुत ही चाव से बनाई जाती थी। जो भाग केशों में घुसकर उनको संवार लेता, उसको दांता वाला भाग कहा जाता, ये दांते छोटे और बड़े दो तरह के होते, एक या दोनों ही ओर होते। कंघे या कंघी को कभी पांवों के नीचे से नहीं निकाला जाता, धूप में नहीं रखा जाता। महिलाएं बारीक दांतों का प्रयोग करने के लिए कई बार मौली आदि लपेट लेती थी ताकि जूं के अलावा लीखें (लिक्षा) को भी बाहर निकाला जा सके।

वैखानस आगम ग्रंथ में सोना, चांदी के कंघे बनाने की परंपरा मिलती है जो आठ अंगुल के होते थे। ये छह अंगुल के भी होते। इस प्रमाण का आधा उसका विस्तार होता। इन पर बीस-बीस दांत होते थे और ये दोनों ही बाजुओं पर होते थे। यदि सोलह और आठ अंगुल होते तो उस कंघे को शुभ माना जाता था -

कंकतं कनकं रूप्यमपि वाष्टांगुलायतम्।
षडंगुलायतं यद्वा तदर्धांगुल विस्तरम्।।
विंशत्या दशनैर्युक्तं भवदुभयतो मुखम्।
यद्वा षोडशभिर्दन्तैरष्टाभिर्वाथ मंगलम्।।
(लक्षण प्रकाश : वीर मित्रोदय)

समरांगण सूत्रधार में भी कंकत बनाने की विधि लिखी गई है। मूर्तियों में ऐसा प्रयोग देखने को नहीं मिलता, मगर देवालयों में नाना वस्तुओं के दान के विषय में ऐसे लक्षण मिलते हैं, जैसा कि वीर मित्रोदय के लक्षण प्रकाश में आया है। विदेशों में भी कंघे का उपयोग बहुत होता आया है। वहां कंघी के प्रयोग की मूर्तियां भी बनी हैं।

एक पक्ष यह भी है कि कंघी केवल बाल संवारने की वस्तु नहीं, वह प्रेम का भी प्रतीक है। बस्तर में मुरिया लड़के कलात्मक कंघियाँ बनाकर अपनी प्रमिकाओं को देकर रिझाते हैं।

कांगसियो तो हटवाड़े में बहुत सस्ते मिला करते थे। सिंघडियो के हों या लकड़ी के। लोकगीतों में आया सवा लाख का कांघसिया तो हजम ही नहीं होता था। सोना चांदी के कंघों का भी जिक्र होता है।

नीलकंठ द्वारा आईवीएफ बेबीज कार्निवल आयोजित

आईवीएफ द्वारा जन्मे बच्चों एवं उनके अभिभावकों को किया सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। नीलकंठ आईवीएफ फर्टीलिटी एंड टेस्ट ट्यूब बेबी सेंटर द्वारा आईवीएफ बेबीज कार्निवल का आयोजन योइस होटल में किया गया।

नीलकंठ आईवीएफ के डॉ. आशीष सूद एवं डॉ. सिमी सूद ने बताया कि कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट थे। सम्माननीय अतिथि आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल एवं कंट्रोलर डॉ. विपिन माथुर एवं राजस्थान सरकार के हेल्थ डिपार्टमेंट के जोइंट डायरेक्टर डॉ. जुल्फीकार ए. काजी एवं विशिष्ट अतिथि फर्टी 9 के एक्ज्यूकेटिव डायरेक्टर एवं सीईओ विनेश गढ़िया थे। कार्यक्रम में सेलिब्रेटी अतिथि के रूप में अभिनेत्री एवं ब्लॉगर चारू असोपा भी आई। असोपा जो देवों के देव... महादेव में राजकुमारी रेवती, बालवीर में सबसे पसंदीदा अटखाती परी, मेरे अंगने में प्रीति श्रीवास्तव, जीजी मां में श्रावणी 'पियाली' पुरोहित और कैसा है ये में मृदुला के किरदार के लिए जानी जाती है।

डॉ. सूद ने बताया कि कार्यक्रम में नीलकंठ आईवीएफ द्वारा होने वाले सभी आईवीएफ बेबीज को आमंत्रित किया गया जो भारत के कोने-कोने से उदयपुर पहुंचे। कार्यक्रम में बच्चों एवं उनके अभिभावकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य नि:संतानता से जुड़ी गलत धारणों को दूर करना और यह समझाना है कि आईवीएफ के बच्चे भी सामान्य बच्चों की तरह ही होते हैं।

कार्यक्रम को यादगार बनाने के लिए बच्चों के लिए स्पेशल गेम जोन भी बनाया गया जिसमें मैजिक शो, ट्रामपॉलिन, टैटू आर्ट, नेल आर्ट, रिमोट कार आदि गेम्स शामिल थे। कार्यक्रम में बच्चों के कार्टून कैरेक्टर भी अलग-अलग वेशभूषा में उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त राजेंद्र भट्ट ने नीलकंठ हॉस्पिटल परिवार को बधाई देते हुए कहा कि यहां से कितने ही परिवारों को खुशियां मिली हैं। उनके जीवन में आई एक रिक्तता को पूर्ण किया है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। उन्होंने मंच के सामने बैठे हुए बच्चों की ओर इशारा करते हुए कहा कि ये बच्चे खूब पढ़ाई करेंगे और आगे जाकर कोई डॉक्टर कोई अच्छे पद पर जाकर नाम कमाएंगे, किसी मंच पर मुख्य अतिथि की भूमिका में होंगे। उन्होंने कहा कि नीलकंठ हॉस्पिटल ने परिवारों में खुशियां बांटने का जो काम शुरू किया है वह सिलसिला थमना नहीं चाहिए वह चलते रहना चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने नीलकंठ हॉस्पिटल परिवार को विश्वास दिलाया कि अगर इस संबंध में कोई भी समस्या आए तो जिला प्रशासन आपके साथ खड़ा है।

डॉ विपिन माथुर ने कहा कि आईवीएफ बहुत ही चेलेजिंग काम है। नि:संतान दंपतियों में बहुत बड़ी निराशा का भाव होता है। वह बहुत बड़ी मानसिक परेशानियों से गुजरते हैं। इसका समाधान हॉस्पिटल ने दिया है और दे रहा है। शहर-शहर गांव-गांव जाकर इन्होंने आईवीएफ के प्रति जो जन जागरूकता फैलाई उसी का परिणाम है कि आज नि:संतान दंपतियों के घर में खुशी के फूल खिले हैं, उनके चेहरे पर मुस्कान आई है और उनके घर में खुशियां बिखरी है।

डॉ जुल्फिकार अली काजी ने कहा कि आज वाकई में उत्सव का दिन है। नीलकंठ हॉस्पिटल ने नि:संतान परिवारों के जीवन में आए सूनेपन को दूर करने का काम किया है। आज का दिन उन परिवारों के लिए जश्न का दिन है और जश्न मनाना भी चाहिए। उन्होंने नीलकंठ हॉस्पिटल परिवार से आह्वान किया कि वह भविष्य में इसी तरह गुणवत्तापूर्ण तरीके से जनता की सेवा करते रहे। उन्होंने कहा की उदयपुर संभाग आदिवासी एवं गरीब तबके का है इसलिए ऐसे लोगों के जीवन में खुशियां बांटते समय उनका विशेष ध्यान रखें।

सेलिब्रिटी अतिथि चारू आसोपा ने कहा कि वह बेबी कार्निवल में शामिल होने के लिए वह बहुत ही उत्साहित थी। आज यहां आकर उन्होंने जो देखा और जाना उससे वह बहुत ही खुश है और भावुक भी है। उन्हें आईवीएफ के बारे में पहले कोई ज्यादा जानकारी नहीं थी लेकिन इसके बारे में जब मैंने जाना तो मुझे महसूस हुआ कि वाकई में नि:संतानता का दु:ख क्या होता है। वह भी एक मां है। मां के रूप में अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि जब भी वह अपने काम से घर को लौटती हैं और बेटा जब सामने आता है तो उसकी मुस्कुराहट देखकर वह सारे गम दुख और थकान को भूल जाती है। एक बेटे को देखकर मन की खुशी कैसी होती है यह शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। आज जो भी दंपत्ति नीलकंठ हॉस्पिटल आईवीएफ से लाभान्वित हुए हैं उनके चेहरे पर खुशी देखकर वह बहुत ही भावुक हैं।

विनेश गढ़िया ने कहा कि वे भी 30 साल से आईवीएफ से जुड़े हैं। यह बहुत ही मुश्किल काम है लेकिन यह जिस तरह से चारों ओर खुशियां बिखेरने का काम करता है वह अद्‌भुत है। यह खुशियों की जगह है और आज यहां पर खुशियों का मेला है।

स्वागत उद्‌बोधन देते हुए डॉ. सीमी सूद ने सभी अतिथियों एवं दंपतियों का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उन्होंने नीलकंठ हॉस्पिटल कि अब तक की यात्रा के बारे में बताते हुए कहा कि 2003 में उदयपुर से इसकी शुरुआत हुई। प्रारंभिक काल में जब यह शुरू हुआ तब लोगों को आईवीएफ के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। जिन्हें जानकारी थी भी सही तो वे आईवीएफ से घबराते थे और इस तरफ नहीं बढ़ना चाहते थे। ऐसी विकट परिस्थितियों के चलते उन्होंने संकल्प किया कि वे शहर-शहर, गांव-गांव जाएंगे और आईवीएफ के बारे में लोगों को जागरूक करेंगे। धीरे-धीरे उनका यह प्रयास धरातल पर आया और नि:संतान दंपतियों की इसमें रुचि बढ़ती गई। इसी के चलते 2007 में आईवीएफ शुरू किया गया। आज 25000 से ज्यादा बच्चे आईवीएफ से दुनिया में आकर के मुस्कुरा रहे हैं।

डॉ. आशीष चौधरी ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि देशभर से जितने भी दंपति यहां पर आए हैं और जो नीलकंठ हॉस्पिटल से लाभान्वित हुए हैं वे इस परिवार का हिस्सा हैं और हमेशा रहेंगे।

इससे पहले प्रेसवार्ता में डॉ. आशीष सूद ने बताया कि नीलकंठ फर्टिलिटी एंड वुमन केयर हॉस्पिटल की स्थापना डॉ. सिमी सूद ने की जिन्होंने यह सपना देखा था कि राजस्थान के हर एक नि:संतान दम्पतियों को आई.वी.एफ प्रक्रिया के बारे में जागरूक कर उनके माता-पिता बनने का सपना साकार कर सकें। इसी सोच के साथ नीलकंठ हॉस्पिटल की स्थापना 2007 में की गई जो अपने आदर्श वाक्य 'मातृत्व के सपने को साकार' करने के अनुरूप आज दिन तक हजारों नि:संतान दम्पतियों के चेहरों पर मुस्कान ला रहे हैं। उन्होंने बताया कि डॉ. सिमी सूद 20 से भी अधिक वर्षों के लम्बे अनुभव के साथ दक्षिण राजस्थान में सहायक प्रजनन के क्षेत्र में अग्रणी हैं। उन्हें दक्षिण राजस्थान के 'प्रथम टेस्ट ट्यूब बेबी' देने का श्रेय जाता है। आई.वी.एफ के क्षेत्र में उन्हें टाइम्स हेल्थ अचीवर अवार्ड और वीमेन ऑफ सब्सटेंस अवार्ड दिया गया है।

डॉ. सिमी सूद ने बताया कि उनका मुख्य उद्देश्य आई.वी.एफ उपचार को ग्रामीण आबादी तक उचित कीमत पर आसानी से उपलब्ध कराना है। उन्होंने प्रचलित मान्यताओं से आगे सोचने की हिम्मत की और आज तक नीलकंठ फर्टिलिटी अस्पताल हजारों नि:संतान दम्पतियों के चेहरों पर मुस्कुराहट ला चुका है। रोगियों के मुस्कुराते चेहरों ने हमें अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप सफलता दर हासिल करने में मदद की है। साइंटिफिक डायरेक्टर और हमारे एआरटी सेंटर का मुख्य आधार है। इनका लक्ष्य, नि:संतानता, प्रजनन संरक्षण और विभिन्न वैज्ञानिक उपचार विकल्पों के बारे में जागरूकता फैलाना है ताकि हर एक रोगी की आवश्यकता के अनुरूप उच्चस्तरीय तकनीक द्वारा आधुनिक व गुणवक्तायुक्त स्वास्थ सेवाएँ प्रदान की जा सके।

सूद ने बताया कि राजस्थान के पांच बड़े-बड़े शहरों में हमारे सेंटर चल रहे हैं। आज देशभर से नि:संतान दम्पत्ति नीलकंठ हॉस्पिटल में अपना इलाज कराने आते हैं और यहां से खुशियां लेकर जाते हैं। उनका विश्वास ही हमारी पूंजी है। हम अच्छी क्वालिटी और बेहतर सुविधाओं के साथ कभी समझौता नहीं करते हैं। आज हर तरफ एक ही आवाज है कि नीलकंठ है तो सब मुमकिन है।

एक्मे फिनट्रेड इण्डिया लि. का आईपीओ 19 से

उदयपुर (ह. सं.)। संभाग में फाईनेंस क्षेत्र में अग्रणी कम्पनी एक्मे फिनट्रेड इण्डिया लि. 19 से 21 जून तक अपना आईपीओ लाकर एनएसई एवं बीएसई के मुख्य बोर्ड पर लिस्ट होने जा रही है । कम्पनी को सेबी, एनएसई एवं बीएसई द्वारा आईपीओ के लिए स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है।

यह जानकारी सॉलिटेयर गार्डन में आयोजित इनवेस्टर एवं एनालिस्ट मिट तथा प्रेसवार्ता में कम्पनी के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर निर्मलकुमार जैन ने दी। उन्होंने बताया कि इसके अन्तर्गत बाजार से लगभग 132 करोड़ रुपए से अधिक का निवेश लेने का लक्ष्य है । कम्पनी करीब एक करोड़ दस लाख शेयर लेकर आ रही है। प्राप्त निवेश को अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को हासिल करने में लगाएगी। डायरेक्टर दीपेश जैन ने बताया कि कम्पनी के इस आईपीओ में मर्चेंट बैंकर ग्रीटेक्स कॉर्पोरेट सर्विसेज प्रा. लि. है साथ ही रजिस्ट्रार एवं ट्रांसफर एजेंट (आरटीए) बिग शेयर सर्विस प्रा. लि. है । कम्पनी 26 जून को एनएसई एवं बीएसई के मुख्य बोर्ड पर लिस्ट होगी। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पंजीकृत एक्मे फिनट्रेड इण्डिया लि. का गठन 28 वर्ष पूर्व जैनाचार्य कुन्थुसागर महाराज के आशीर्वाद, प्रेरणा एवं उनके नाम पर रखा गया था।

सीईओ बॉबीसिंह चंदेल ने बताया कि कम्पनी का एकमात्र उद्देश्य था कि संभाग के ऐसे गांव और क्षेत्र जहाँ आज भी बैंकिंग व्यवस्था उपलब्ध नहीं है, जहां असंगठित फाइनेंस सुविधा लोगों को उपलब्ध कराई जाती थी, ऐसी स्थिति में लोगों को अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए, अधिक से अधिक रोजगार सृजन करने, एवं अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए कम से कम कागजी कार्रवाही, आसान शर्तों एवं कम ब्याज दर में लोगों को ऋण प्रदान कर उनकी मदद करने के लिए अपना फाइनेंस व्यवसाय शुरू किया था। तब से अब तक उदयपुर संभाग के साथ-साथ संपूर्ण राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्र में अपने व्यवसाय का फैलाव कर चुकी है। प्रेसवार्ता में सीआरओ सुरेशकुमार गुप्ता, एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर राजेन्द्र चित्तौड़ा, सीएफओ रजनी गहलोत, सीएस रौनक झुठावत, केसूलाल जैन, हीरालाल जैन, कमलेश जैन आदि मौजूद थे।

बाप

बाप रात रौ चांदणौं
बाप आभै रौ तावड़ौ
बाप घर रौ बांधणौं
बाप चौक रौ डाखड़ौ
बाप घर री आस
बाप घर री सांस
बाप घर री रास
बाप घर री जास
बात कैवण में
घणीं सांतरी
पिण
जुगाजुग सूं बाप
रैयौ फ़ग़त बापड़ौ
घुमतौ रैवै
घांणी रै बलद तांयी
करतौ रैवै जतन
आखी जूण
कुनबे खातर
नीं जाणें कोई
उणरै हिवड़ै री पीड़
लड़तौ रैवै खुदौ खुद
आपणा पराया सूं
मान नियति
लेवै धमीड़ा
अंतस माय
जीवतड़ौ मरतौ रेवौ
जुग री काण अर
मूंछ री करडाण
राखण खातर

– रमेश बोराणा

युग निर्माण के प्रणेता थे जनुभाई : प्रो. सारंगदेवोत

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय के संस्थापक मनीषी पं.जनार्दनराय नागर की 113वीं जयंती पर 'जनुभाई महज एक नाम नहीं बल्कि विचार' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की

गई। अध्यक्षता करते हुए कुलपति कर्नल प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि जनुभाई युग निर्माण के प्रणेता थे जिन्होंने आजादी के आंदोलन में महात्मा गांधी की प्रेरणा से जनमानस को शिक्षा के माध्यम से जागरूक किया। स्वतत्रंता की अलख जगाते हुए मेवाड़ के जन-जन की निरक्षरता का अंधकार दूर करने की जो तपस्या पं. जनार्दनराय नागर ने की, उन्हें युग-युग तक भुलाया नहीं जा सकता। वे हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। आजादी के 10 वर्ष पूर्व 1937 में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की जिसे बाद राजस्थान विद्यापीठ के नाम से जाना गया।

मुख्य अतिथि कुलप्रमुख भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि जनुभाई अपने आप में किसी पुरस्कार से कम नहीं थे। दिन भर काम करने वालों को पुन: शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के उद्देश्य से जनुभाई ने रात्रिकालीन श्रमजीवी कॉलेज की स्थापना की। सामाजिक चेतना एवं शिक्षा प्रसार के लिए उनके द्वारा किए गए कार्य उल्लेखनीय है। प्रो. हेमेन्द्र चौधरी ने कहा कि जनुभाई का मानना था कि शिक्षा के माध्यम से ही आमजन को जागरूक किया जा सकता है। इसके लिए जनुभाई ने गांव-गांव में प्रौढ़ शिक्षा के केन्द्र खोले और हिन्दी के माध्यय से प्रचार-प्रसार शुरू किया। संचालन प्रो. मलय पानेरी जबकि आभार सहायक कुल सचिव डॉ. धमेन्द्र राजौरा ने जताया। निजी सचिव केके कुमावत ने बताया कि संगोष्ठी से पूर्व जनुभाई की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई।

स्मृतियों के शिखर (186) : डॉ. महेन्द्र भानावत

अपने लेखन को अगर और चन्दन समझते थे नाहटाजी

बीकानेर के अगरचन्द नाहटा का 72 वर्ष की उम्र में देहावसान हुआ। यों सरस्वती और लक्ष्मी दोनों के दो भिन्न विपरीत रास्ते हैं पर नाहटाजी पर दोनों की पूर्ण कृपा थी बल्कि यों कहें कि वे पढ़े-लिखे केवल पांचवीं होने पर भी सरस्वती असीम रूप से उन पर तुष्टमान थी। हिन्दुस्तान की कोई भी पत्र-पत्रिका ऐसी नहीं थी जिसमें वे नहीं छपे हों। वे सबसे ज्यादा छपे और उन्होंने सर्वाधिक लिखा।

उनका हर कार्य नियमबद्ध था। एक क्षण भी वे इधर-उधर हुआ पसन्द नहीं करते थे। यही कारण रहा कि उन्होंने हिन्दुस्तान में फैले-छिपे सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डारों की छानबीन कर डाली। इससे उनके हाथों कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का उद्धार हुआ। ढेर सारी अज्ञात सामग्री प्रकाश में आई जिससे कई लोग शोध-खोज की ओर प्रवृत्त हुए और ज्ञान-विज्ञान के बहुमुखी स्त्रोत खुले एवं विकसित हुए।

एक ओर तो उन्होंने यह किया। दूसरी ओर स्वयं अपने अभय जैन ग्रन्थालय में सभी भाषाओं प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, अरबी, फारसी, उड़िया, बंगला और सभी विषयों की 65-70 हजार हस्तप्रतियां एकत्र कीं। शोधकार्य को गति देने और विद्वानों तथा शोध करने वालों को सर्व सुलभ कराने के लिए सभी विषयों की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं भी जुटाईं। पचास हजार के करीब तो ग्रन्थ ही हैं। इसके अलावा पट्टे-परवाने, पत्र, दस्तावेज, बहियां, शिलालेख यानी जो भी मिला सबका संग्रह किया। यह सारी सामग्री कल्पना से परे है।

और इस सामग्री से भी परे स्वयं नाहटाजी थे जिन्हें सब कुछ मौखिक याद रहता था। वे तो चलते-फिरते भारतीय ज्ञान के महोदधि ही थे। बीकानेर में जब मैंने बी.ए. तक की कॉलेज की पढ़ाई की, सन् 1955 से 58 तक, तब कई बार उनके अभय जैन ग्रन्थालय में जाने और उनके कार्यों में हाथ बंटाने का मौका मिला। दो-एक बार तो जब उनके पास कोई लिखने वाला नहीं आया तो मैंने वह कार्य किया। तब नाहटाजी चारों ओर पड़ी-दड़ी पुस्तकों के बीच आलथी-पालथी मारकर बैठ जाते और एकचित्त हो ऐसे लिखाते कि जैसे धारासण दूध की तरह सरस्वती ही मुलक पड़ती। कभी-कभी बीच निबन्ध के उन्हें कोई उद्धरण देना होता तो हजारों पुस्तकों में से उस पुस्तक विशेष को निकाल लाते और उसमें से जितना अंश काम का होता बोल देते और तत्काल उसे उसी स्थान पर रख आते। इसी से उनकी विलक्षण एवं विचक्षण प्रतिभा और स्मरण शक्ति का अन्दाज लगाया जा सकता है।

स्वभाव से नाहटाजी बड़े कंजूस थे। भारत जैसे गरीब देश में पैसे की प्रतिष्ठा और उसकी अर्थवत्ता को भलीप्रकार समझते थे इसीलिए उन्हें कहीं जाना होता, तांगे से यदि बैलगाड़ी सस्ती होती तो वे उसी में बैठना पसन्द करते थे। चाहे व्यंग्य या विनोद में ही सही पर उनके साथ जुड़ा यह प्रसंग कितना सटीक लगता है कि वे कहानी तक में पैसे का अपव्यय बर्दाश्त नहीं करते और मौका पड़ने पर अड़ियल बन उसका महत्त्व प्रतिपादित करवाकर ही चैन की सांस लेते।

कहते हैं एकबार किसी कहानी की गोष्ठी में चले गये। वहां एक सज्जन कहानी पढ़ रहे थे कि लड़का-लड़की में प्रेम हो जाता है और दोनों ही अपने साथ पांच हजार रूपये लेकर भाग जाते हैं। ऊंघते हुए नाहटाजी के कानों में ज्योंही यह बात पड़ती है कि वे चौंक पड़ते हैं और उन महाशय से कहते हैं- 'इसे फिर से पढ़ो।' वह अंश वापस पढ़ा जाता है तो तनिक सावधान हो पूछ बैठते हैं- 'कितने रूपये लेकर भागे?' श्रोताओं में से कोई बोल पड़ता है- 'पांच हजार।'

इस पर नाहटाजी घोर आपत्ति करते हैं और कहते हैं- 'कहानी लेखक को मालूम नहीं है कि पांच हजार रूपये कितने होते हैं और किस मुश्किल से कमाये जाते हैं।' बीच में से फिर कोई श्रोता बोल पड़ता है, 'साब, यह कोई वास्तविक घटना थोड़े ही है, कहानी ही तो है।'

यह सुन नाहटाजी थोड़े उत्तेजित होते हैं और कहते हैं- 'कहानी है तो क्या, उसमें भी गप्प कैसे चल सकती है? आप लोग यथार्थ से परिचित नहीं हैं। मैं इतना रूपया लेकर उन्हें भागने नहीं दूंगा, आखिर रूपयों की भी एक प्रतिष्ठा है। एक तो आपत्ति की बात यह है कि लड़की या लड़का जो भी पांच हजार रूपये वे आखिर लाये कहां से? उनके माता-पिता के पास इतने रूपये आये कहां से?' और अंत में उन्होंने धमकी भरी घोषणा की, 'जब तक कहानी में रूपयों का ठीक ढंग से तालमेल नहीं होगा, मैं कहानी आगे चलने नहीं दूंगा।'

नाहटाजी पर सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की पूर्ण कृपा थी। वे केवल पांचवीं तक पढ़ेलिखे थे। हिन्दुस्तान की कोई भी पत्र-पत्रिका ऐसी नहीं थी जिसमें वे नहीं छपे हों। उनका हर कार्य नियमबद्ध था। एक क्षण भी वे इधर-उधर हुआ पसन्द नहीं करते थे। उन्होंने हिन्दुस्तान में फैले-छिपे सैकड़ों हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डारों की छानबीन की। इससे उनके हाथों कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का उद्धार हुआ। ढेर सारी अज्ञात सामग्री प्रकाश में आई जिससे कई लोग शोध-खोज की ओर प्रवृत्त हुए और ज्ञान-विज्ञान के बहुमुखी स्त्रोत खुले एवं विकसित हुए।

उन्होंने अपने अभय जैन ग्रन्थालय में सभी भाषाओं प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, अरबी, फारसी, उड़िया, बंगला और सभी विषयों की 65-70 हजार हस्तप्रतियां एकत्र कीं। शोधकार्य को गति देने और विद्वानों तथा शोध करने वालों को सर्व सुलभ कराने के लिए सभी विषयों की पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाएं भी जुटाईं। पचास हजार के करीब तो ग्रन्थ ही थे। इसके अलावा पट्टे-परवाने, पत्र, दस्तावेज, बहियां, शिलालेख यानी जो भी मिला सबका संग्रह किया। इस सामग्री से भी परे स्वयं नाहटाजी थे जिन्हें सब कुछ मौखिक याद रहता था। वे तो चलते-फिरते भारतीय ज्ञान के महोदधि ही थे।

इस पर लोगों ने पूछा, 'तो आप क्या चाहते हैं, पांच हजार की बजाय दो हजार कर लें?' नाहटाजी बोले, 'दो हजार भी तो बहुत होते हैं।' एक आवाज आई, 'पांच सौ कर दो और पिण्ड छुड़ाओ यार।' नाहटाजी इस पर भी सहमत नहीं हुए। उन्होंने कहा, 'दो सौ बहुत होते हैं। पैसा फालतू थोड़े ही है जो वे लेकर भाग जायें।' अन्त में मामला दो सौ रूपयों पर जाकर रूका और गोष्ठी आगे बढ़ी।

इस घटना से नाहटाजी की प्रकृति का पता चलता है कि वे किस तरह से एक-एक पैसे की गांठ बांधकर तनिक भी उसका दुरुपयोग बर्दाश्त नहीं करते थे। कई अध्ययनरत छात्र उनके वहां काम कर अपनी खर्ची निकालते। नाहटाजी उनसे हस्तलिखित ग्रन्थों की नकल करवाते। प्रति पृष्ठ पैसा बंधा रहता मगर वे प्रति लाईन बल्कि प्रति शब्द को तोल-तोल कर पैसा देते। ऐसे छात्रों से सर्वप्रथम कुछ लिखवाकर उनकी लिपि और लेखन क्षमता देखते।

सबसे पहले अपने यहीं उन्हें प्रति घण्टा मेहनताने पर रखते। उनसे किताब झड़वाते, तरतीबवार करवाते। फटी-टूटी चीजें चिपकवाकर ठीक करवाते। हाथखर्ची के रूप में चार आने से लेकर पांच-छह आने देते। जिनसे हस्तलिखित ग्रन्थों की नकल करवाते उन्हें जो कागज देते उनमें प्रति पृष्ठ पांच-छह लाइनें अधिक डली हुई मिलतीं। हाशिया वे स्वयं मोड़कर बताते कि ऊंगली की मोटाई से तनिक भी अधिक न छूटने पाये। आधे पौन पृष्ठ की लिखाई को नहीं गिनकर बट्टे में चलने देते। इस बीच वे सारा हिसाब कर पैसे निकाले तब तक कोई दूसरा, तीसरा काम भी फोकट का दे देते जो उसे मजबूरन करना ही पड़ता।

मैंने भी ऐसे काम किये हैं मगर कितने ही लोग ऐसे थे जो वहां यह सब करते-करते आगे जाकर अच्छे लेखक भी बन गये। यह सारी प्रक्रिया एक तरह से शोध और साहित्य की पढ़ाई की ही थी जिसे नाहटाजी जैसे विरल व्यक्तित्व के धनी ही करा सकते थे। पचासों ऐसे नाम मेरे ध्यान में हैं जो नाहटाजी के वहां तैयार हुए हैं। यह उनकी बहुत बड़ी देन थी।

उनका लेखन भी अपने आप में बड़ा दर्शनीय, प्रदर्शनीय और पुरातत्वीय जायका लिये था। साधारणजन तो क्या विशिष्टजन भी उसे नहीं पढ़ पाते थे। कुछ लोग उनके पत्र को उथलाने के लिए इधर-उधर भटकते तो कुछ अन्त में परेशान हो उन्हें लिख देते कि आपका पत्र मिल गया मगर आपने क्या लिखा, पढ़ने में नहीं आया। मेरे साथ में भी शुरू-शुरू में तो यही हुआ फिर तो मैं एक्सपर्ट ही बन गया।

वे कभी आराम से नहीं रहे यानी फालतू नहीं रहे बल्कि कहें तो यह कि उन्होंने अपना हर समय सार्थक जिया। जब वे यात्रा में जाते तब तो अपने को और अधिक व्यस्त कर देते। एक ही काम लेकर तो वे कभी बीकानेर छोड़ते ही नहीं। जहां भी जाते, वहां क्या-क्या करना, किस-किस से मिलना, इसकी लम्बी सूची ही बना लेते और कइयों को व्यस्त बल्कि अस्त-व्यस्त भी कर देते। लोग घबरा जाते, परेशान भी हो जाते, नाहटाजी को इसका पता भी लग जाता मगर उन्हें तो तभी चैन मिलता जब उनका काम पूरा हो जाता। अपना काम निकलवाने में उनकी उगाही पठानी उगाही को भी पीछे ढकेलती। एक ही काम के लिए कागज पर कागज लिखते फिर कइयों को और लिख देते तब सम्बन्धित व्यक्ति को बिना मन से भी, परेशानियों से बचने के लिए, पिण्ड छुड़ाने के लिए भी उनका काम करना होता।

नाहटाजी से मैंने यह बात कह भी दी थी तो वे तनिक मुस्कराये और कहा, ''आपका कहना सही है पर मुझे तो काम करवाना है सो वह क्या सोचता है, महसूस करता है, इसका मैं ध्यान नहीं देता। यदि मैं इन चीजों पर ध्यान देता तो कुछ नहीं कर पाता। यों मैं अपने लिए यह काम नहीं कर रहा हूं। यह तो ऐसा काम है जो बिना एक-दूसरे के सहयोग से पूरा होने का भी नहीं।''

सोचता हूं, यदि वे सरस्वती पुत्र होते तो भी इस काम में सफल नहीं होते। उनके लक्ष्मी पुत्र ने ही उनके सरस्वती पुत्र का इतना महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कराया।

नाहटाजी के मेरे पचासों संस्मरण हैं। ढेरों मेरे पास उनके पत्र हैं। भारतीय लोककला मण्डल का, देवीलाल सामरजी का उनके साथ रिश्ता-नाता होने के भी अच्छे-खासे संस्मरण-स्मृतियां हैं।

अपने अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए उन्होंने ही सारा-का-सारा पत्राचार किया और फिर वे ही उसे लिये-लिये बेचते भी रहे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो उनका वह ग्रन्थ ही पचास गुना सवाया होता। मैंने तो उन्हें कहा भी था कि यह काम हम लोगों पर छोड़ दें मगर ऐसा उनके स्वभाव में नहीं था। इसीलिए वह ग्रन्थ सिकुड़कर सिमट गया।

उदयपुर वे जब भी आते, बहुत सारा काम लेकर आते। एक बार वे राजस्थान साहित्य अकादमी की बैठक में आये। मारवाड़ की गाड़ी जो रात को ग्यारह-बारह बजे आती है, नाहटाजी उस रात अपना भरपूरा बिस्तर अपने सिर पर रख पैदल पंचायती नोहरे के पास रह रहे अम्बालालजी पगारिया के वहां पहुंच गये और काफी देर तक किंवाड़ भड़भड़ाकर उन्हें आवाज देते रहे।

उनकी जोर-जोर की आवाज से आसपास के लोग जाग गये और तब उन लोगों ने पगारियाजी को भी जगाया। पगारियाजी ने ज्योंही नाहटाजी को सिर पर बिस्तर लिये देखा तो उन्हें गुस्सा भी आया और इस बात का गौरव भी महसूस हुआ कि इतने बड़े आदमी का उनके घर पदार्पण हुआ है।

उन्होंने अपने यहां उन्हें अच्छा स्थान और अच्छी आवभगत एवं इज्जत दी। सुबह नाहटाजी के कहने से पगारियाजी ने मुझे बुलवाया और रात का सारा किस्सा कहा और यह भी कहा कि मेरे प्रेस में दिन भर लोगों का आना-जाना और मशीन का भड़भड़ाना होता रहेगा अत: उन्होंने नाहटाजी से इजाजत लेकर धर्मशाला में उनके लिए कमरा ले लिया और अपने नौकर से ठेला मंगवाया।

ठेले में उनका बिस्तर रख दिया गया। कोई बीसेक कदम ठेले वाला चला होगा कि पीछे से नाहटाजी बड़े ठपके से उछल कर उस ठेले पर जा बैठे। ठेले वाला अचानक उचका। पीछे देखा तो ठेले पर नाहटाजी बिराजमान थे। उसने ठेला रोक दिया और उन्हें उतरने को कहा पर नाहटाजी टस-से-मस नहीं हुए और टुकड़ों-टुकड़ों में यही कहते रहे- ''तुम्हारे क्या फर्क पड़ता है, ठेला तो जा ही रहा है। वैसे और सामान ही इसमें क्या है। सिवाय एक बिस्तर के। तू यही समझ ले कि एक बिस्तर नहीं होकर दो बिस्तर हैं। यदि नहीं मानता है तो चार आने ज्यादा ले लेना।''

नाहटाजी के इतना कहने पर ठेले वाले ने कुछ नहीं कहा। शायद वह समझ गया था कि यह कोई चालू व्यक्ति नहीं है। उसका और उसके ठेले का सौभाग्य है कि इतना बड़ा व्यक्ति उसके ठेले की सवारी कर रहा है।

उसके दूसरे दिन प्रात: आठ बजे मैं नाहटाजी के पास पहुंच गया और सड़क चलते अचानक मुझे ध्यान आया कि नाहटाजी का एक चित्र खींचवालूं। तब नाहटाजी के कहने से मैंने पास ही के नाई से उनकी दाढ़ी बनवाई और फोटू खींचवाया।

बीकानेर पहुंचते ही उन्होंने फोटू की याद दिला दी बल्कि उघाई ही शुरू कर दी। मैंने तत्काल उन्हें एक चित्र भेजा तो उन्होंने मुझे उसकी एक दर्जन कापियां भिजवाने को लिखा। मैंने वह भी किया। उसके बाद उन्होंने एक दर्जन और कापियां मांगी। मैंने उनका यह कार्य नहीं किया तो उन्होंने मुझे कार्ड-पर-कार्ड लिखे। और मुझे ही नहीं, डॉ. ब्रजमोहन जावलिया, डॉ. देव कोठारी आदि को भी लिखे वे भी मेरे पास आए। सारा किस्सा सुन वे भी ठहाका मारने लगे।

अंत में तंग आकर फिर मैंने उन्हें एक दर्जन कापियां भेजीं और लिखा कि अब आप मुझसे कोई कापी न मंगवायें। मैंने तो आपका यह चित्र मेरे अपने लिए खींचवाया था। आप जब अन्यों को भेजते रहते हैं तो मेरे खींचवाये फोटो की क्या खासियत रहेगी? शायद यह बात नाहटाजी के समझ में आ गई थी कारण कि उसके बाद उन्होंने मुझसे कभी फोटू भिजवाने के लिए नहीं लिखा।

वे अपने पत्रों में निरन्तर कुछ-न-कुछ लिखने, करने की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन दिया करते। कभी-कभी कहीं कोई लेख छपा देखते तो उसकी प्रशंसात्मक टिप्पणी और आगे कुछ करते रहने की प्रोत्साहनपूर्वक बात लिखते। उनका ग्रन्थालय सचमुच में शोधार्थियों के लिए तीर्थस्थल था। उनकी सामग्री का उपयोग कर कई व्यक्ति पीएच. डी., डी.लिट्. हो गये और ख्यात-प्रख्यात बन बड़े-बड़े ओहदे पर पहुंच गये मगर नाहटाजी को किसी विश्वविद्यालय ने कोई सम्मान नहीं दिया न राज्य अथवा केन्द्र सरकार ने ही उनकी कोई सुध ली परन्तु वे तो सचमुच भारतश्री ही थे।

सच तो यह है कि नाहटाजी जैसे भारतीय कला के महान प्रचेता, मर्मज्ञ, उद्धारक, इतिहास-पुरातत्व के अजस्त्र अनुसंधाता, प्राचीन साहित्य-संस्कृति के अध्यवसायी, सेवक-अन्वेषक, साधुमना, सरल, विरल, साधक, विचारक, स्वाध्यायी शताब्दियों में जाकर कभीक पैदा होते हैं।

नाहटाजी एक ऐसा व्यक्तित्व था जो अपने समय तक भारतीय ज्ञान और अनुचिंतन की सुवास देता हुआ कभी पीछे ना हटा, ना हटा। वे वस्तुत: वर्णमाला के प्रथम अक्षर अ माने अगरचन्द नाहटा थे। अपने लेखन को वे अगर और चन्दन जैसा पवित्र मानते रहे। उनके प्रत्येक लेख में अन्यों के लिखने की ऐसी सुवास रहती कि बरसों तक वह सुगंध दिमाग में बनी रहती।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 जून 2024

सम्पादकीय

विविध वर्णी लोकराग में प्रकृति और पुरुष

सृष्टि में मनुष्य की केन्द्रीय भूमिका के चलते यदि देखा जाय तो मनुष्य की इयत्ता प्रकृति की विशालता के समक्ष बहुत छोटी दिखाई देती है। वास्तव में क्या मनुष्य ही सृष्टि के केन्द्र में है अथवा और भी कोई सृष्टि को संचालित करने में अपनी-अपनी जगह छोटी से छोटी भूमिका निभाते हुए बड़ा काम और उत्तरदायित्व निभा रहे होते हैं। दरअसल, असली बात यह है कि प्रकृति ने जिनको जो काम प्रारम्भ में सौंप दिया, वह तत्व पूरी निष्ठा और ईमानदारी से उसे सदियों-सदियों से ज्यों का त्यों निभाता चला आया है।

प्रकृति के इस नियम को किसी तत्व ने आज तक नहीं तोड़ा और सम्भवत: अनन्त काल तक प्रकृति यह कार्य करती रहेगी। प्रकृति ने मनुष्य के लिये ऐसी पुख्ता व्यवस्था कर दी है। उदाहरण के रूप में सूर्य न जाने कबसे सुबह उदित हो रहा है। चन्द्र ?मा धरती पर शीतलता का अमृत बिखेर रहा है। बादल वर्षा कर रहे हैं। हवा बह रही है। नदी पहाड़ पेड़-पौधे, पशु-पक्षी आदि चराचर के तत्व अपने-अपने काम कर रहे हैं। प्रकृति मनुष्य से बहुत पुरातन है, इसलिए उसके पास नैसर्गिक अनुभव भी मनुष्य से अधिक है। प्रकृति ने मनुष्य को पैदा किया है, यही कारण है कि मनुष्य की सारी 'निर्भरता' प्रकृति पर आधारित है। यह सच है कि मनुष्य में अन्य प्राणियों के अलावा सोचने-समझने और कुछ अलग करने की 'विवेक बुद्धि' है, इसलिए उसने प्रकृति के सान्निध्य में अपने एक 'लोक' का ही निर्माण कर लिया, जिसका 'राग' बिल्कुल प्रकृति से भिन्न और विविधवर्णी है।

मनुष्य प्रकृति के 'लोकराग' में जीता है। इस लोकराग को गढ़ने में मनुष्यों को पीढ़ियों का अनुभव लगा है। प्रकृति दो प्रकार की होती है- एक बाह्य प्रकृति और दूसरी मनुष्य के भीतर की प्रकृति। प्रकृति स्वयं स्फूर्त है और मनुष्य प्रकृति प्रकृति से स्फूर्त है। मनुष्य की प्रकृति से 'लोकराग' फूटता है। जैसे प्रकृति में फूल खिलते हैं। वायु बहती है। फल लगते हैं। कोयल गाती है। वर्षा होती है। सर-सरिताएं सर-सर बहती है। बीज अंकुरित होता है। यह सब प्रकृति का राग है। प्रकृति का राग निरन्तर है जो धरती के अणु-अणु में समाहित है ।

लोक का राग मूलत: संस्कृति का राग है। लोक के इस राग से मनुष्य और सृष्टि की इयत्ता बनती है। मनुष्य की समस्त गतिविधियों को यह इयत्ता आच्छादित कर लेती है। आच्छादित ही नहीं करती बल्कि उसके मानस की भीतरी तहों तक जम जाती है। यहीं संस्कृति बन जाती है। संस्कृति के ये संस्तर ही मनुष्य की कला, साहित्य, अध्यात्म और लोक व्यावहारिकी की रचना करते हैं।

यही लोक के मुखराग हैं, जिनमें मनुष्य प्रेम का गान करता है। यह गान ईश्वर की प्रार्थना तक जाता है। इस प्रयास में मनुष्य एक अद् ?भुत गीत, संगीत, नृत्य आदि की रचना करता है और प्रकृति के अद्वितीय अनन्त आनन्द के लोकराग में खो जाता है। तब लोक पूरी तरह से अपना एक विशिष्ट संसार रच लेता है जिसमें कला, संस्कृति और साहित्य का नया सहज विकास होता है। इस विकास में 'लोकराग' अपने समय में पुनर्नवा होता है, तब लोक अपने समय के राग को फिर से रचने में समर्थ होता है और इस तरह लोकराग के नवोन्मेषी आनन्द का स्रोत कभी सूखने नहीं पाता।

मनुष्य प्रकृति से संस्कृति की ओर अग्रसर होता है और बार-बार लोकराग के महासमुद्र में अवगाहन करता है। लोकराग सभी प्राणियों के भीतर संचरित होता है। उसकी लय कभी टूटती नहीं है। 'लोक' अपने ही 'राग' से पुन: पुन: सिंचित होता है और उसकी निरन्तरता हर काल में उतनी ही स्पृहणीय और महनीय बनी रहती है।

लोकराग सबके भीतर बजता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुरूप किसी-न-किसी लय से बंधा रहता है। उसे सुनने की जरूरत है। हर प्राणी-व्यक्ति में यह लय मौजूद है। जीवन का लक्ष्य ही इस लय या आनन्द को पाना है। वेदों से लगाकर आज के शब्द संसार का भी यही पथ है। यह वह लक्ष्य है, जिसमें लोक के राग के हर अप्रतिम स्वर को पाने और सुनने की लालसा अन्तर्निहित है।

लोक के इस राग की यात्रा अनन्त है। आदिकाल से मनुष्य की यह लोकराग यात्रा आनन्द की अनन्त प्यास की यात्रा है। जिस दिन लोक के राग की अनन्त यात्रा रूक जायगी उस दिन मनुष्य का जीवन एकदम नीरस और शुष्क हो उठेगा। लोकराग के बिना लोक का गान सम्भव नहीं है। हो सके तो जीवन आनन्द के इस लोकराग की सरिता को अपने भीतर सूखने न दें, उसमें जितना हो सके अवगाहन करें। **– वसंत निरगुणे, अतिथि संपादक**

प्रो. सारंगदेवोत का सम्प्रति संस्थान ने किया अभिनंदन

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि के कुलपति और सम्प्रति संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर कर्नल शिवसिंह सारंगदेवोत के विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि में कुलपति पद पर 12 वर्ष पूर्ण होने पर सम्प्रति संस्थान की ओर से उनका अभिनंदन किया गया।

संस्थान के सचिव डॉ. तुक्तक भानावत ने विद्यापीठ परिसर में प्रो. सारंगदेवोत का शॉल, उपरणा ओढ़ाकर अभिनंदन कर उनको शुभकामनाएं दीं। भानावत ने कहा कि प्रो. सारंगदेवोत के कार्यकाल में विद्यापीठ ने कई नए आयाम स्थापित किए जिसको लेकर सम्प्रति संस्थान भी गौरवान्वित है। प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि सम्प्रति संस्थान के जरिए 2024 में कोई बड़ा सामाजिक और सांस्कृतिक सरोकार उदयपुर में आयोजित किया जाए जिसको लेकर जल्द बैठक कर निर्णय करेंगे।

चार दिन, चार जन, चार तीर्थ की गुजरात यात्रा (2)

-अर्थांक भानावत-

एक छोटे से लड़के को हमने पूरी दुकान संभालते देखा और एक ही दुकान में देशी घी, नारियल के खेत, भोजनालय, चाय की टपरी से लेकर जो एक इंसान सोच सकता है वह लोग उस चीज का व्यवसाय एक छोटे से गांव में कर रहे थे।

24 अप्रैल की सुबह उठकर हमने बेट द्वारका की तरफ शुरुआत की। बेट द्वारका एक द्वीप पर स्थित

है। ऐसा माना जाता है कि यह मन्दिर वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित किया गया था और लगभग 500 साल पुराना है।

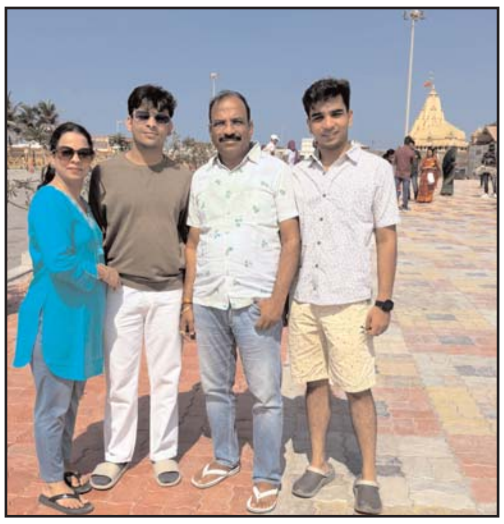

कृष्ण ने जहां राज किया उस नगरी को कुछ पुराणों में बेट द्वारका कहा गया है और कुछ पुराणों में सुदामा का दिया एक तोहफा जहां यादवों ने यात्रा की।

भारत सरकार के द्वारा बनाए गए नए पूल से हम बेट द्वारका के द्वीप तक पहुंचे। वहां से रिक्शा कर हम बेट द्वारका के मन्दिर की ओर बढ़े, जो हमारी कल्पना से काफी छोटा था। उस मन्दिर के दर्शन कर हमने वापस श्रीनाथजी की मूर्ति की स्मृतियां याद कीं। कृष्ण के कई मन्दिरों में एक प्रकार की काली मूर्ति देखने को मिलती है।

बेट द्वारका से 22 किलोमीटर दूर नागेश्वर महादेवजी का ज्योतिर्लिंग है। नागेश्वर महादेव के रास्ते में ही हमें शिवजी की एक बड़ी सी मूर्ति की स्मृति दिखनी चालू हुई। लाल रंग का एक छुपा हुआ मन्दिर हमें दिखना चालू हुआ। दूर से देख कर ऐसा लग नही रहा था कि यह एक ज्योतिर्लिंग है। अन्दर जाकर हमने चांदी से बने एक भव्य शिवलिंग को देखा और एक शांत सी अनुभूति को महसूस किया। शिवलिंग के इर्दगिर्द सफेद पोशाक में पंडित आरती कर रहे थे। महादेव के दर्शन कर हमने एक शिकंजी पी और सोमनाथ की ओर चल दिए।

सोमनाथ का रास्ता देख हम चकाचौंध रह गये। 180 किलोमीटर तक एक सीधे रास्ते का हमने अनुसरण किया। बीच में खाना ढूंढना तक मुश्किल प्रतीत हुआ पर आखिरकार हम काठियावाड़ की भूमि में काठियावाडी खाना खाने के लिए रुके और वह खाना इतना स्वादिष्ट था कि पेट तो भर गया मगर मन नहीं भरा।

एक छोटे से लड़के को हमने पूरी दुकान संभालते देखा और एक ही दुकान में देशी घी, नारियल के खेत, भोजनालय, चाय की टपरी से लेकर जो एक इंसान सोच सकता है वह लोग उस चीज का व्यवसाय एक छोटे

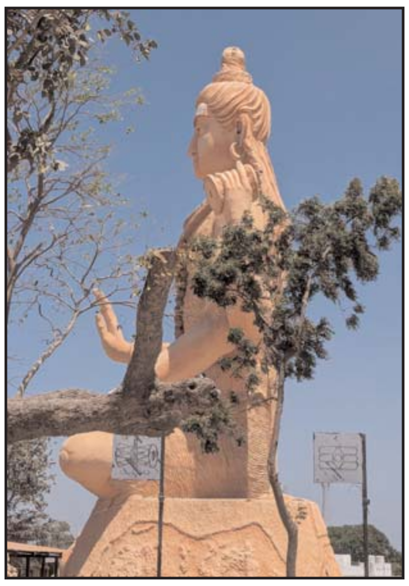

से गांव में कर रहे थे। यहां से यात्रा चालू कर हम सोमनाथ की पवित्र धरती पर पहुंचे।

सोमनाथ के विकास को देख कर भी हमें आश्चर्य हुआ। बड़े-बड़े रास्ते भव्य मन्दिर, डिजिटाइज्ड पार्किंग की सुविधा से लेकर हर एक वर्ल्ड क्लास सुविधा यहां उपलब्ध थी। सोमनाथ के समुद्र तट पर स्थित मन्दिर में जाकर हमने सूरज को ढलते हुए देखा।

इस पवित्र भूमि पर स्थित हजारों साल के इतिहास के बारे में जाना। कैसे ये मंदिर टूट-टूट कर वापस बना, कैसे सोमनाथ ने शिवजी से आशीर्वाद लेकर यहां एक ज्योतिर्लिंग स्थापित किया और कैसे कई अनेक लोगों ने अपनी जान देकर इस मन्दिर को बचाया इसकी धरोहर को जारी रखा। इस समृद्ध विरासत में मंत्र मुग्ध होकर हमने इस दिन का अंत किया और आगे आने वाले अनुभवों का इंतजार किया। **– क्रमश:**

लघु फिल्म निर्माण कार्यशाला में जितेन्द्र मेहता ने की भागीदारी

उदयपुर (ह. सं.)। 6 से 9 जून 2024 तक उदयपुर के बड़गांव स्थित प्रताप गौरव केंद्र राष्ट्रीय तीर्थ में आयोजित लघु फिल्म निर्माण कार्यशाला में अलर्ट संस्थान के अध्यक्ष जितेन्द्र मेहता ने भाग लिया।

कार्यशाला में राष्ट्रीय स्तर के कहानीकार, फिल्म निर्माता, निर्देशक एवं अनुदेशकों द्वारा फिल्म निर्माण के लिए महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। फिल्म क्यों देखें, फिल्म के महत्वपूर्ण चरण, पटकथा लेखन, लघु फिल्म निर्माण के विभिन्न उपकरण, स्वर और अभिनय, फिल्म निर्माता एवं निदेशक एवं फिल्म समीक्षा के बारे में जानकारी दी गई। 9 जून को मास्टर क्लास में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता निर्देशक डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी ने फिल्म निर्माण के अनुभवों को साझा किया एवं फिल्म निर्माण एवं उपयोगिता बताई।

महलनुमा घर

उनके घर में
टी.वी. है, फ्रिज है,
उनके घर में घर है
झौपड़ियों के बीच में
महलनुमा घर है
उनका घर चौतरफा हरियाली
के बीच है।
उनके घर बड़ी-बड़ी अलमारी है
ठसाठस भरी है कीमती वस्त्रों
और सुवर्णाभूषणों से भरी है
कुछ मिले पैतृक कुछ मिले भेंट में
घर के भीतर दीवारों पर
अस्त्र-शस्त्र टके है
पूर्व राजा के नीलाम हुए।
दीवारों पर बाघ चीतल की खाले है
उनके घर निराले है
जैसे वे।

- रेवतीरमण शर्मा

फ्लिपकार्ट ने डीपीआईआईटी से मिलाया हाथ

उदयपुर (ह. सं.)। फ्लिपकार्ट ने उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) से हाथ मिलाया है। फ्लिपकार्ट ने डीपीआईआईटी के साथ मिलकर वैश्विक स्तर पर खिलौना आपूर्ति उद्योग में भारत की स्थिति को मजबूत करने के उद्देश्य के साथ कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में घरेलू विनिर्माताओं के कौशल विकास पर जोर दिया गया, जिससे वे भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करने वाले इनोवेटिव एवं उच्च गुणवत्ता के खिलौने बनाने में सक्षम हो सकें। खिलौनों के मामले में भारत को वैश्विक विनिर्माण हब बनाने के लक्ष्य के साथ सरकार ने कई रणनीतिक पहल की हैं। नेशनल एक्शन प्लान फॉर ट्वायज (एनएपीटी) के रूप में व्यापक नीति तैयार करना इसी दिशा में एक पहल है। एनएपीटी के तहत मुख्य पहल का उद्देश्य गुणवत्ता में सुधार, नवोन्मेष और बाजार में विस्तार के माध्यम से भारतीय खिलौना उद्योग को नई ऊंचाई पर पहुंचाना है। पूरे भारत से सैकड़ों खिलौना विनिर्माताओं ने कार्यशाला में हिस्सा लिया। इसमें फ्लिपकार्ट के साथ मिलकर संवादात्मक एवं विशेषज्ञों की अगुआई में परिचर्चा का आयोजन किया गया। गुणवत्ता में सुधार, नवोन्मेष और उद्योग के मानकों का अनुपालन जैसे विषयों को परिचर्चा के केंद्र में रखा गया।

आबू के आदिवासी विवाह गीत

- डॉ. सोहनलाल पटनी -

आदिवासियों के गीत मुख्य रूप से लोकगीत हैं। स्वच्छन्द और उन्मुक्त जीवन जीने के कारण इनके गीतों में कहीं कोयल की कूक है तो कहीं मयूर का मादक नृत्य। इनके गीतों की प्रांजलता, तालबन्दी, गेयता, लोच और अभिव्यंजना भी सुनने वाले को अभिभूत किये बिना नहीं रहती है।

देवी प्रकोप एवं शही सभ्यता से लुटे आदिवासी अभाव की जिन्दगी बसर करते हैं। अशिक्षा एवं अन्धविश्वास इनके जीवन में सदा साथ चलते हैं फिर भी अपार जीवन शक्ति इन आदिवासियों में होती है। नाचना और गाना इनके अभाव भरे जीवन में मस्ती का उद्रेक करता है। विवाह हो या उत्सव या पशुबलि का अवसर हो, आदिवासी गाना व नाचना नहीं भूलता है।

प्रत्येक त्यौहार और आयोजन के लिए इन आदिवासियों में पृथक-पृथक गीत विद्यमान हैं। इनमें सामूहिक गीत, युगल गीत और प्रश्नोत्तर के रूप में स्त्री-पुरुषों के सहगान कितनी ही तरह के गीत हैं। आबू क्षेत्र के ये वनवासी अपने गीतों के लिए वाद्ययन्त्रों पर कम ही निर्भर करते हैं।

यहां मैं सिर्फ आबू क्षेत्र के आदिवासियों के विवाह गीत प्रस्तुत कर रहा हूं। वैसे तो इन आदिवासियों में विवाह के गीत भी बहुत हैं लेकिन प्रमुख विवाह गीत बारात स्वागत, जनवासे के गीत, शादी के समय के गीत आदि गीतों को ही देने का प्रयास रहा है।

बारात स्वागत गीत :

इस गीत को जब आदिवासियों की बारात गांव के नजदीक आती है उस वक्त पर बड़े चाव से महिलाएं गाती हुई बारात में चलती हैं।

पिंगल गड़े रा ढोला कीम जाहो, पिंगल गड़े रा
हेलदी में पड़ीया ढोला कीम जाहो,
कुआरी रहे है कन्या ढोला कीम जाहो
परणवा रो हुंस रे ढोला कीम जाहो
मीड़ोरा रा भरीया ढोला कीम जाहो
तागो रा थमे भरीया ढोला कीम जाहो
परणे ने घरे जाइजो ढोला कीम जाहो
कुण है थारो बापो ढोला कीम जाहो
कुण है थारो काको ढोला कीम जाहो
कुण है थारी काकी ढोला कीम जाहो
बाधवा ऐतरो लाड़ ढोला कीम जाहो
सोनका थे मो चालिये ढोला कीम जाहो

जनवासे का गीत :

यह गीत जब बारात डेरे पर पहुंचती है उस वक्त गाते हैं कि 'बेवाई, जल्दी करो वरना शादी का मुहूर्त टल जाएगा।'

झेट केरे मारा बेड़ा वेवाई लगन रे जाई
झेट केरे मारी वेडी वैवाण लगन रे जाई
झेट केरे वेवाई जोन हूं करवा बेहारीये
लाड़ी होती के नी होती जो हूँ करवा बेहारीये
लाड़ी घेर नी होती तो जोन हूं करवा बेहारीये
म्हारी बड़ी रे वेवाण जोन हूं करवा बेहारीये

विवाह पूर्व का गीत :

इस गीत में विवाह के समय पर जब दूल्हा शादी करने जाता है उस वक्त दूल्हे को धीरे-धीरे चलने की सलाह दी जाती है अन्यथा पैर में मोच आ जाने का खतरा है।

धीरा-धीरा चालो रे राइवर कोगरली मचकाई रे राइवर
कोगरली मचकाई रे।।
जोनीयो री जोरी चालो रे राइवर कोगरली मचकाई।।
जानणी री जोरी चालो रे राइवर कोगरली मचकाई
सालो सालो रे नौनरीया वीर चालो रे परणवा
थमरे बापो पुटर आवी रे वीर चालो रे परणवा
मायरली एतरो लाड़ रे वीर चालो रे परणवा

वोरजी आगर री घाटी वोरजी उभा रेजो
थमरे बापो पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे बेन री पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे मायरली पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे काकी पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे काको पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे मामो पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे मामी पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
थमरे बाधवा पुटर आवे वोरजी उभा रेजो
वोर तो रेहु-रेहु करता रे वोर तो वे ही गया रे।

आयो आयो म्हारे केयो बाधव नुतरीयो
आयो आयो म्हारे केयो मामो नुतरीयो
आयो आयो धोरीले बेहेने आयो म्हारे देवो मामो नुतरीयो
आयो आयो धोरीले बेहेने आजो भाणेज रो मोडो रेचीयो

इस गीत में दूल्हे या दुल्हन को लाड़-प्यार से सम्बोधित करता हुआ दर्शाया गया है कि कौन तेरा पिता, मां, मामा, भाई आदि है तथा इन सभी के वास्तविक नाम गाते हुए बताया गया है कि दूल्हे राजा खूब खुश रहो। सभी तेरे सम्बन्धी मौजूद हैं और शादी घूमधाम से रचायेंगे।

रेम कोनेया, खेल कोनेया घमसे मोंदल वाजे
कुण है थारो बापो, कोना घमसे मोंदल बाजे
कुण है थारी माता कोना, घमसे मोंदल बाजे
मांरी जगन मोडीया कोना घमसे मोंदल वाजे
बाधवे जगन मोडीया कोना घमसे मोंदल वाजे
हरदी में रेमो कोना घमसे मोंदल वाजे
तैलेयो में रेमो कोना घमसे मोंदल बाजे
कुणेरे घर जाये कोनेया घमसे मोंदल बाजे
बेवाईयो रे घर जायो कोनेया घमसे मोंदल बाजे
बापे लाड़ पुरीयो कोनेया घमसे मोंदल वाजे
क्वारी है कनीया कोना घमसे मोंदल बाजे

यह गीत भी शादी के समय का ही है। हल्दी की महंगाई बताते हुए कहा है कि महंगी सस्ती कैसी भी होगी तो खरीदना ही है अर्थात् शादी जो तय है वह होकर ही रहेगी। यदि महंगाई आदि कारणों से तय नहीं होवे तो अखण्ड क्वारा रहना पड़ेगा।

हल्दी भोला भाडेर माय, हल्दी मूगी घणी।
भोडे रे री धरती, हल्दी मूंगी घणी।।
सुतो सोवन ढोलीये, हल्दी मूंगी घणी।
आधी के मजरात, ढोला सुतो सोवन डोलीये, हल्दी मूंगी घणी।।
सुने सपनो आयो ढोला, हल्दी मूंगी घणी।
मायरली मोनो तो बात सोलु, हल्दी मूंगी घणी।।
जाइया मोनवा सरकी मोनु, हल्दी मूंगी घणी।
लाड़ा थारे बापो हल्दी मोलवो, हल्दी मूंगी घणी।।
सुंगी मूगी हल्दी मोलवो, हल्दी मूंगी घणी।
कुवारी है कनीया, हल्दी मूंगी घणी।।
परणु तो वे कनीया, हल्दी मूंगी घणी।
वाधर वारी धरती कनीया सपने आये, हल्दी मूंगी घणी।।
जाइया नहीं जावा रो जोग, हल्दी मूंगी घणी।
वेरीया री धरती जाइया नी जावा रो जोग, हल्दी मूंगी घणी।।

यह गीत खासकर दूल्हा के लाड़-प्यार करने के अवसर पर गाया जाता है। दूल्हे को खाट (चारपाई) पर बैठा देते हैं तथा दूल्हे के रिश्तेदार युवा-युवतियां खाट को ऊपर जमीन से उठाकर ऊपर बैठे दूल्हे को खूब उछाल-उछाल कर गीत गाते हैं। इसमें दूल्हे को 'लीला मोरीया' के नाम से सम्बोधित किया गया है।

लीला मोरीया रे, मेघो रो भाणेज, लीला मोरीया रे
लीला मोरीया रे, कुण है बारा मामा, लीला मोरीया रे
लीला मोरीया रे, बारह मेघ मामा, लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे पारो हारा जीत रे, लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे रन रो खोरो, मोरीया ऐकलो-लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे पारो बारह काल रे-लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे बैठो लीले रे डाल लीला मोरीया रे
भाणेज मोरीया रे लेओ ठाडा पवन, लीला मोरीया रे

आदिवासियों के गीत मुख्य रूप से लोकगीत हैं। स्वच्छन्द और उन्मुक्त जीवन जीने के कारण इनके गीतों में कहीं कोयल की कूक है तो कहीं मयूर का मादक नृत्य। इनके गीतों की प्रांजलता, तालबन्दी, गेयता, लोच और अभिव्यंजना भी सुनने वाले को अभिभूत किये बिना नहीं रहती है।

इस आलेख में दिये गये लेख मैंने स्वयं आदिवासी क्षेत्रों में जाकर सुने और उसी आधार पर इन्हें लिखा गया है। आज आवश्यकता इस बात की है कि आदिवासी गीतों को एकत्र किया जाय अन्यथा शहरीकरण के प्रभाव में आदिवासियों की यह लोकसंस्कृति विलुप्त हो जायगी और हमें इनसे वंचित हो जाना पड़ेगा।

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं-
https://thetimesofu-daipur.com/shabd-ranjan/

महाराणा प्रताप : ऐसा व्यक्तित्व जिसने कभी अधीनता स्वीकार नहीं की

- महेशचन्द्र शर्मा -

स्वाधीनता का नाम आते ही मेवाड़ का नाम अवश्य सबके जहन में आ ही जाता है। यहां अनेक वीरों ने अपनी जान गंवाकर मेवाड़ की रक्षा की। मुगलों ने यहां कई बार आक्रमण किये लेकिन यहां के वीरों ने अपनी जान पर खेल कर मेवाड़ की रक्षा की। ऐसे ही सपूतों में से एक थे महाराणा प्रताप।

महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के मेवाड़ में राजपूताना राजघराने में हुआ था। वे उदयपुर, मेवाड़ में सिसोदिया राजवंश के राजा थे। इनके पिता का नाम उदयसिंह द्वितीय और माता का नाम महारानी जयंवता बाई था। महाराणा प्रताप सभी भाई-बहनों में सबसे बड़े थे। उनका नाम इतिहास में वीरता, शौर्य, त्याग, पराक्रम और दृढ़ प्रण के लिये अमर है। उन्होंने मुगल बादशाह अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की और कई सालों तक संघर्ष किया। अंतत: अकबर महाराणा प्रताप को हराने में असफल रहा।

महाराणा प्रताप की नीतियां ब्रिटिश के खिलाफ बंगाल के स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनीं। उन्होंने मुगलों द्वारा बार-बार हुए हमलों से मेवाड़ की रक्षा की। महाराणा प्रताप का जन्म राजस्थान के मेवाड़ के कुम्भलगढ़ में हुआ था जो आज राजसमंद जिले का उपखण्ड है। हर साल देशभर में महाराणा प्रताप की जयंती धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाई जाती है। उन्होंने कई युद्ध में मुगलों को हार की धूल चटाई। महाराणा प्रताप और मुगलों के बीच कई युद्ध हुए और उन्होंने हमेशा मेवाड़ की रक्षा की। 1576 में महाराणा प्रताप और अकबर के बीच हुआ हल्दीघाटी युद्ध बहुत ही भयावह था। इस युद्ध की तुलना महाभारत युद्ध से की जाती है।

कहा जाता है कि हल्दीघाटी युद्ध में अकबर के 85 हजार वाली विशाल सेना का सामना महाराणा प्रताप ने अपने 20 हजार सैनिकों से किया। बुरी तरह से जख्मी होने के बाद भी महाराणा प्रताप अकबर के हाथ नहीं आए। इस तरह से महाराणा प्रताप ने अपने कौशल और युद्ध कला का परिचय दिया।

9 जून को मुगल सम्राट अकबर के खिलाफ हल्दीघाटी की लड़ाई के दौरान महाराणा प्रताप की वीरता और नेतृत्व का जश्न मनाया जाता है। अपने लोगों के प्रति साहस और समर्पण की उनकी विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करती है। भारतीय इतिहास में उनकी अदम्य भावना और योगदान का सम्मान करते हुए पूरे देश में उत्सव मनाए जाते हैं। राजस्थान के मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह द्वितीय के घर जन्मे महाराणा प्रताप को वीरता और नेतृत्व की शिक्षा विरासत में मिली। उनके शासनकाल को उनके राज्य की संप्रभुता और उनके लोगों की रक्षा के लिए लड़ी गई कई लड़ाइयों द्वारा चिह्नित किया गया था।

विशेष रूप से, उन्होंने मुगल सम्राट अकबर के खिलाफ स्वतंत्रता के पहले युद्ध का नेतृत्व किया। हल्दीघाटी का युद्ध उनके साहस और देशप्रेम का प्रमाण है, जहां उन्होंने मुगल सेना की ताकत का सामना किया था। प्रतिरोध और देशभक्ति की भावना का प्रतीक, महाराणा प्रताप का नेतृत्व और बहादुरी कई पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

महाराणा प्रताप के शासनकाल में सबसे रोचक तथ्य यह है कि मुगल सम्राट अकबर बिना युद्ध के प्रताप को अपने अधीन लाना चाहता था इसलिए अकबर ने प्रताप को समझाने के लिए चार राजदूत नियुक्त किए। इसमें सर्वप्रथम सितम्बर 1572 ई. में जलाल खाँ प्रताप के खेमे में गया। इसी क्रम में मानसिंह (1573 ई. में), भगवानदास (सितम्बर, 1573 ई. में) तथा राजा टोडरमल (दिसम्बर,1573 ई.) प्रताप को समझाने के लिए पहुँचे, लेकिन राणा प्रताप ने चारों को निराश किया। इस तरह राणा प्रताप ने मुगलों की अधीनता स्वीकार करने से मना कर दिया जिसके परिणामस्वरूप हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध हुआ।

महाराणा प्रताप मुगल सम्राट अकबर से नहीं हारे। उन्होंने उसे एवं उसके सेनापतियों को धुल चटाई । हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप जीते। महाराणा प्रताप के विरुद्ध हल्दीघाटी में पराजित होने के बाद स्वयं अकबर ने जून से दिसम्बर 1576 तक तीन बार विशाल सेना के साथ महाराणा पर आक्रमण किए, परन्तु महाराणा को खोज नहीं पाए, बल्कि महाराणा के जाल में फँसकर पानी भोजन के अभाव में सेना का विनाश करवा बैठे। थक हारकर अकबर मालवा चला गया। पूरे सात माह मेवाड़ में रहने के बाद भी हाथ मलता रहा।

पिम्स इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्युटर साइंस ने लांच किया बीसीए कोर्स

उदयपुर (ह. सं.)। दक्षिण राजस्थान के विद्यार्थियों के करियर को नयी उड़ान देने के लिए साई तिरूपति विश्वविद्यालय उदयपुर ने एक नया बीसीए कोर्स लांच किया है। वर्तमान समय की मांग को देखते हुए यहां पर प्रायोगिक शिक्षा पर आधारित इस कोर्स के लिए सत्र 2024-25 के लिए प्रवेश प्रारम्भ हो गये हैं। यह जानकारी संघ चेयरमैन आशीष अग्रवाल ने प्रेसवार्ता में दी। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष देवर्षि मेहता, डॉ. नरेन गोयल, डायरेक्टर डॉ. रिमझिम गुप्ता, प्रो. प्रेसिडेंट पियुष जवेरिया, इंडस्ट्री एक्सपर्ट भास्कर गर्ग, प्रिंसिपल विप्रा सुखवाल एवं स्टाफ के सदस्य उपस्थित थे।

आशीष अग्रवाल ने बताया कि आज का समय कम्प्यूटर का है कई विद्यार्थी बेचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लिकेशन कोर्स करना चाहते हैं लेकिन ज्यादातर स्थानों पर पारम्परिक शिक्षण विधि से ही पढ़ाया जाता है इस कारण विद्यार्थियों को अच्छी जॉब नहीं मिल पाती है। हमारा लक्ष्य है विद्यार्थियों को प्रयोगिक ज्ञान देना ताकि उनका करियर अच्छा बन सके।

देवर्षि मेहता और डॉ. नरेन गोयल ने बताया कि साई तिरूपति यूनिवर्सिटी के तहत पीआईएमएस इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्युटर साइंस में तीन साल का डिग्री कोर्स बीसीए करवाया जाएगा। इसमें मार्केट की मांग को देखते हुए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंडस्ट्री आधारित ट्रेनिंग, मशीन लर्निंग, नवीनतम प्रोगामिंग, भाषाओं का ज्ञान, डिजिटल मार्केटिंग का विशेष रूप से ज्ञान दिया जाएगा। कोर्स में किसी भी संकाय से 12वीं पास विद्यार्थी प्रवेश ले सकता है।

डायरेक्टर डॉ. रिमझिम गुप्ता ने बताया कि वीम्स के तहत बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन इन इंटरनेशनल बिजनेस (बीबीए-आईबी) में अंतर्राष्ट्रीय एक्सपोजर, विदेश दौरा, ई-कॉमर्स और विदेशी भाषा सीखने का अवसर और एमबीए हॉस्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन एंड हेल्थ केयर मैनेजमेंट जिसमें विभिन्न हॉस्पिटल के कार्य एवं सॉफ्टवेयर के साथ संचालित किया जा रहा है, इसके अलावा इसमें हॉस्पीटल के एडमिन संबंधित जॉब से संबंधित काफी अवसर प्राप्त हो सकते हैं। बीबीए कोर्स में विद्यार्थी को एक बार विदेश यात्रा करवायी जाती है ताकि वहां के उद्योगों के प्रबंधन के गुर सीख सके।

प्रो. प्रेसिडेंट पियुष जवेरिया ने बताया कि 21 वर्षों से संचालित वीआईएफटी कॉलेज में फैशन डिजाइनिंग, इंटीरियर डिजाइनिंग, जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन आदि कार्सेस करवाए जा रहे हैं। यहां की अनुभवी फेकल्टी टीम द्वारा विद्यार्थियों को प्रेक्टिल नॉलेज दिया जाता है जिससे विद्यार्थियों को बड़ी कम्पनियों में अच्छा पैकेज व पद मिलता है।

संस्कृत विद्यार्थियों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम शुरू

25 लाख पांडुलिपियों का करेंगे डिजिटालाइजेशन

उदयपुर (ह. सं.)। केंद्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कौशल विकास (स्किल डवलपमेंट) के कार्यक्रम की शुरूआत होने जा रही है। प्रतिवर्ष विद्यार्थियों के होने वाले इस कौशल विकास के कार्यक्रम के लिए एक

अनुबंध (एमओयू) पर हस्ताक्षर हुए। एमओयू पर धरोहर संस्थान के संस्थापक संजय सिंघल और केंद्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्रीनिवास वारखेडी ने हस्ताक्षर किये। यह कार्यक्रम 42 दिन का होगा।

संजय सिंघल ने बताया कि इस इंटर्नशिप प्रोग्राम के जरिए विद्यार्थी प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहण का कार्य सीखेंगे, उसके बारे में जानेंगे और समझेंगे। इसके जरिए अपने जीवन कौशल के भविष्य की तस्वीर यहां से तैयार होगी जो इस ज्ञान के जरिए उनके जीवन में बहुत काम आएगी। उन्होंने बताया कि इस 42 दिवसीय इन्टर्नशिप कार्यक्रम में केंद्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की विभिन्न शाखाओं से 25 विद्यार्थी अपनी शैक्षणिक योग्यता का समुचित प्रयोग करते हुए धरोहर द्वारा किए जा रहे प्राचीन पांडुलिपियों के संग्रहण का कार्य सीखेंगे। इस इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान दैनिक जीवन में उपयोगी कौशल को विकसित करने का भी अवसर प्राप्त करेंगे। सिंघल ने बताया कि धरोहर प्रतिवर्ष इस संस्थान के विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप प्रोग्राम आयोजित करेगा। इस प्रोजेक्ट का लक्ष्य अगले 20 वर्षों में 25 लाख पाण्डुलिपियों की डिजिटल प्रतिलिपियां बनाना, पृष्ठों को सही क्रम में रखना और उनको सूचीबद्ध करना है।

उदयपुर के छात्रों का ओलंपियाड में उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर (ह. सं.)। विश्व के सबसे बड़े ओलंपियाड, साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन द्वारा आयोजित इंटरनेशनल ओलंपियाड परीक्षा 2023-24 में उदयपुर के तीन छात्रों ने इंटरनेशनल रैंक हासिल की है। रॉकवुड्स इंटरनेशनल स्कूल की दूसरी कक्षा की छात्रा प्रेसा सिंह ने नेशनल साइंस ओलंपियाड में प्रथम रैंक हासिल कर अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक और प्रमाण पत्र प्राप्त किया। स्टेप बाय स्टेप हाई स्कूल के पहली कक्षा के छात्र लव्यांश जैन और काव्यांश शंकर ने इंटरनेशनल मैथमेटिक्स ओलंपियाड में प्रथम रैंक हासिल कर अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक और प्रमाणपत्र प्राप्त किया। इस वर्ष के एसओएफ ओलंपियाड में उदयपुर के 19,069 से अधिक छात्र शामिल हुए जो दिल्ली पब्लिक स्कूल, विद्या इंटरनेशनल स्कूल, सीडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल के थे।

इस अवसर पर पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिसरा, प्रसिद्ध लेखक एवं स्तंभकार चेतन भगत, प्रोफेसर वाई. एस. राजन, पूर्व विक्रम साराभाई प्रतिष्ठित प्रोफेसर इसरो, सीएस आशीष मोहन, सचिव, भारतीय कंपनी सचिव संस्थान और आर. रवि, सीईओ, संस्थापक एपिएन्स सॉफ्टवेयर प्रा. लि. मौजूद थे। एसओएफ के संस्थापक निदेशक महावीर सिंह ने कहा कि समारोह में एसओएफ ने युवा पीढ़ी के बीच हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ओलंपियाड शुरू करने की घोषणा की। उन्होंने बताया कि 2023-24 के शैक्षणिक वर्ष में, 70 देशों के 91,000 से अधिक स्कूलों ने भाग लिया। इनमें 7000 स्कूलों के 1,30,000 से अधिक छात्रों ने शीर्ष राज्यस्तरीय रैंक के लिए पुरस्कार प्राप्त किए, और 1,000,000 से अधिक छात्रों को स्कूलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त, 3,500 प्रधानाचार्यों और शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

जिंक फुटबॉल अकादमी को राजस्थान लीग में तीसरा स्थान

उदयपुर (ह. सं.)। जिंक फुटबॉल अकादमी की सीनियर टीम, जिसमें ज्यादातर अंडर-20 खिलाड़ी शामिल हैं, राजस्थान पुरुष लीग ए-डिवीजन 2023-24 में सराहनीय प्रदर्शन के साथ शीर्ष तीन में स्थान अर्जित किया। खेले गए 16 मैचों में 11 जीत और 3 ड्रॉ के साथ, हिंदुस्तान जिंक की जिंक फुटबॉल अकादमी ने पूरे टूर्नामेंट में 61 गोल किए।

राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन द्वारा आयोजित राज्य लीग में राजस्थान की नौ सर्वश्रेष्ठ टीमों - एफसी ब्रदर्स यूनाइटेड, रॉयल एफसी जयपुर, सनराइज एफसी सिरोही, एएसएल एफसी, जयपुर एलीट एफसी, जयपुर फुटसल एफसी, अवीवा स्पोर्ट्स फाउंडेशन, चैंपियन मेकर एफसी एवं जिंक फोटोबॉल अकादमी की भागीदारी देखी गई। हालांकि जिंक फुटबॉल अकादमी की टीम में सबसे कम उम्र के खिलाड़ी थे, लेकिन वह इस बात से घबराये नहीं और बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए अपने आखरी 12 मैचों में अपराजित रहे। अकादमी के 18 वर्षीय खिलाड़ी सुभाष डामोर ने 16 गोल किए, और लीग के शीर्ष स्कोरर के रूप में उभरे। सुभाष ने इमर्जिंग प्लेयर ऑफ द लीग का पुरस्कार भी जीता।

राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन के सचिव दिलीपसिंह शेखावत ने कहा कि मैं जिंक फुटबॉल अकादमी को राजस्थान लीग 2023-24 में उनके अभियान के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। लीग में सबसे युवा टीम के साथ तीसरा स्थान हासिल करना युवा प्रतिभाओं को निखारने की उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। मैं ज़ेडएफए खिलाड़ी सुभाष डामोर को शीर्ष स्कोरर और सीज़न के उभरते खिलाड़ी के रूप में उनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए विशेष रूप से बधाई देना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि भारतीय फुटबॉल में उनका भविष्य उज्वल है।

उदयपुर में टोयोटा किर्लोसकर मोटर ऑल न्यू अर्बन क्रूजर टाइजर लॉन्च

उदयपुर (ह. सं.)। टोयोटा किर्लोसकर मोटर ने उदयपुर में अधिकृत डीलर राजेंद्र टोयोटा पर एसयूवी के नए सेगमेंट अर्बन क्रूजर टाइजर का अनावरण किया। अनावरण पूर्व राज्यमंत्री हरीश राजानी, राजेन्द्र टोयोटो के मैनेजिंग डायरेक्टर तनय गोयनका एवं निदेशक विनयदीप सिंह कुशवाह ने किया।

विनयदीप सिंह कुशवाह ने बताया कि यह गाडी एक पावर पैक प्रदर्शन, सर्वोत्तम श्रेणी की ईंधन दक्षता और एक एक्सटेरियर का संयोजन है। यह एक आधुनिक स्टायलिंग, अति आधुनिक सुविधाओं और उन्नत प्रौद्योगिकी का मिश्रण है। यह पेट्रोल एवं सीएनजी दो वेरिएंट में लॉन्च की गई हैं।

इसमें 6 एयरबैग, हिल होल्ड असिस्ट हेड अप डिस्प्ले, 360 डिग्री व्यू कैमरा, वायरलेस चार्जर और वायरलेस एप्पल कार प्ले और एंड्रॉइड ऑटो कनेक्टिविटी के साथ स्मार्ट प्लेकास्ट इंफोटेनमेंट सिस्टम जैसी आधुनिक सुविधाएं हैं। टोयोटा की टिकाऊ मोबिलिटी पेशकशों में से एक के रूप में अर्बन क्रूजर टेसर को अपनी बोल्ड और परिष्कृत स्टाइल तथा उन्नत तकनीकी विशेषताओं की मदद से मार्केट में लॉन्च किया हैं।

उन्होंने बताया कि टोयोटा टाइजर के साथ 2 पेट्रोल इंजन और 1 सीएनजी का विकल्प मिलता हैं। इसके पेट्रोल इंजन 1197 सीसी और 998 सीसी वाईल सीएनजी का है। यह मैनुअल एवं ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ उपलब्ध है। वेरिएंट और फयुल टाइप के आधार पर टाइजर का माइलेज 20 से 22.8 किमी./ लीटर है। टाइजर 5 सीटर है और लम्बाई 3995 (मिलीमीटर), चौड़ाई 1765 (मिलीमीटर) और व्हीलबेस 2520 (मिलीमीटर) है।

कुशवाह ने बताया कि 6 एयरबेग के साथ सुरक्षा सुविधाएँ, हिल होल्ड असिस्ट के साथ वाहन स्थिरता नियंत्रण और अन्य उन्नत सुविधाओं के अलावा रोल ओवर शमन एक सुरक्षित ड्राइविंग अनुभव सुनिश्चित करेगा। इसके 16 इंच के चिकने अलॉय व्हील हैं। एस और जी वैरिएंट डायनामिक ऑल ब्लेक पेंटेड अलॉय व्हील के साथ अलग दिखते हैं। ट्वीन एलईडी डे टाइम रनिंग लाइटें न केवल दिन में दृश्यता बढ़ाती है बल्कि आधुनिक सौंदर्य में भी योगदान देती है। इसके अतिरिक्त वाहन में सवार लोगों को हानिकारक यूवी किरणों से बचाने तथा केबिन के अन्दर गर्मी संचय को कम करने के लिए यूवी कट ग्लास के साथ छत के अंत में स्पॉइलर के साथ एकीकृत एक हाई माउंट स्टॉप लैंस की सुविधा है।

गुजराती आदिवासी रामायण में सर्वथा अनोखे और अद्भुत प्रसंग

-डॉ. भगवानदास पटेल-

मानव समाज के अध्येता मानव समूह की समग्र जीवन-रीति अर्थात् रहन-सहन, रीति-रिवाज, धर्म, धार्मिक अनुष्ठान एवं सामाजिक विधि-विधान, आदतें आदि की सामाजिक विरासत को संस्कृति की संज्ञा से अभिहित करते हैं। इस तरह से सोचें तो मानव संस्कृति का उद्भव मानव जीवन के आरम्भ से हुआ माना जा सकता है।

संस्कृति के नागरिक, ग्रामीण और आदिवासी ऐसे भेद नहीं हैं किन्तु इकाइयां हैं। अत: नगर में है वह नगर संस्कृति का, ग्राम में बसता है वह ग्राम संस्कृति का और वन में रहता है वह वन या आदिवासी संस्कृति का वाहक है, ऐसे ख्याल भ्रामक एवं अर्थहीन हैं। एक ही संस्कृति के ये तीन स्तर हैं और एक ही काल के मानव के संस्कार में ये तीन स्तर होते हैं।

अमुक जाति-ज्ञाति या प्रजाजूय संस्कारी, अमुक अर्ध संस्कारी या पिछड़ा या अमुक असंस्कृत आदि भेद कृत्रिम हैं। किसी भी एक जाति को दूसरी जाति के साथ तुलना करके अर्ध संस्कृत या असंस्कृत कह नहीं सकते। जो जातियां अभी भी अंदरूनी दुर्गम क्षेत्रों में बसती हैं तथा आधुनिक विज्ञान और तकनीक का उन्हें कोई लाभ नहीं मिला है या जिनके पास पूर्ण भाषा या लिपि नहीं है ऐसी जनजातियां या सभ्यताओं को भी असंस्कृत नहीं कहा जा सकता।

जिस जनता में जन्म, विवाह, मृत्यु आदि की संस्कार विधियां प्रचलित हों, भौगोलिक पर्यावरण के अनुकूल रहकर जिस जनता ने अपने व्यक्ति जीवन को, उसके समाज जीवन में व्यवस्थित किया हो, उसके लिए परम्पराएं विकसित की हों, उसको असंस्कृत या अर्ध संस्कृत कह नहीं सकते। प्रत्येक जाति-प्रजाति अपने भौगोलिक, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आपने ढंग से सभ्य और संस्कृत होती है। अन्य समाज की दृष्टि से जो वहम और अंधश्रद्धा है वह उसके लिए जीवन का प्रकृति के साथ अनुकूलन है।

अधिकांश नृवैज्ञानिकों का मानना है कि जीवन के आरम्भ में मानव समाज मातृसत्तात्मक, मातृवंशी एवं मातृस्थायी था। परिवार एक सामाजिक इकाई के रूप में था। मातृसत्तात्मक समाज में पारिवारिक अधिकार माता या परिवार की सबसे बड़ी स्त्री के अधीन रहते थे। समाज में स्त्री का स्थान उच्च, सम्माननीय एवं गौरवपूर्ण था। परिवार में पिता का स्थान आगंतुक या बाहरी व्यक्ति के रूप में था जबकि माता का स्थान स्वतंत्र एवं निश्चित था। स्त्रियां शारीरिक सम्बन्धों में स्वतंत्र एवं स्वच्छंद थीं। वंश परम्परागत अधिकार माता के वंश से प्राप्त होते थे। इसका प्रमुख कारण यौन स्वच्छंदता के कारण पिता द्वारा वंश की परम्पर निश्चित करना कठिन था।

मातृसत्तात्मक एवं मातृस्थानी समाज व्यवस्था में समस्त सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक अधिकार स्त्रियों के हाथ में रहते थे। स्त्रियां धार्मिक कार्य, अनुष्ठान, विधि-विधान एवं पूजा-पाठ कराती थीं। इस समाज में मुख्यत: देवियों की पूजा की जाती थी तथा ऐसा माना जाता था कि देवियां ही उनकी रक्षा करती हैं। पूर्वजों की पूजा भी अस्तित्व में थी तथा पूर्वज स्त्री देवी ही थी। पुरुष स्त्रियों से भयभीत रहते थे।

मानव समाज का विकास मातृसत्तात्मक परिवार होने के प्रमाण लिखित भारतीय साहित्य, पुरावस्तु की भौतिक सामग्री, आदिवासियों की वर्तमान जीवन रीति और उनके मौखिक साहित्य से प्राप्त होते हैं। ऋग्वेदकालीन वैदिकों के देवमण्डल में 'माता अदिति' का प्रमुख स्थान था और अदिति की संतान होने से देव 'आदित्य' कहलाते थे जो उस युग स्थिति मातृसत्तात्मक समाज व्यवस्था की जीवन रीति का साक्ष्य देते हैं। सिंधु, हड़प्पा और लोचन (जिन के साथ निषादों का भी सम्बन्ध था) में से प्राप्त मातृदेवियों की मूर्ति बहुलता भी पांच हजार वर्ष (3250-2750 ई. पूर्व) के मातृसत्तात्मक समाज के प्रमाण देती है।

भीली रामायण- 'राम-सीता मानी वारता' (राम-सीता माता की कथा) उत्तर गुजरात की खेड़ब्रह्मा तहसील से इस सम्पादक-संशोधन द्वारा सम्पादित की गई है। प्राचीनकाल में 'आनर्त' के नाम से प्रसिद्ध इस प्रदेश में फैले दुनिया के एक प्राचीन पहाड़ अरावली की शिखरावालयों की तराई में भारत की एक पूर्वकालीन जाति डूंगरी भील आदिवासी अकेन्द्रित रूप से बसती है। अनेक वर्षों से बसी इस जाति की वैदिक युग से भी प्राचीन, सुदीर्घ और अत्यन्त समृद्ध सांस्कृतिक और मौखिक परम्परा है। पूर्वकाल में भील समाज मातृसत्तात्मक था। इसका आधार वर्तमान में प्रचलित 'राम-सीता मानी वारता', 'भीलों का भारथ' (भीलों का महाभारत) जैसे मौखिक महाकाव्य हैं।

सीता अपने पिता के पास से कन्यादान में पेड़-पौधे के बीज मांगती है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले लक्ष्मण में जो शौर्य था वह राम में नहीं था। अत: लक्ष्मण रावण को मारने में शक्तिमान बनते हैं। कौशल्या के आदेश से लक्ष्मण सीता को बन में छोड़ आते हैं। बाघ सीता को धर्म की बहिन बनाकर, अपनी पीठ पर बैठा सप्तर्षि के आश्रम छोड़ आता है। वहाँ लव-कुश का जन्म होता है। पूरी भील आदिवासी रामायण में सीता और लक्ष्मण के चरित्र ज्यादा सक्रिय एवं कर्मशील हैं।

भील आदि ?वासी समाज में वर्तमान समय में तो पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था है। फिर भी, भाल समाज में प्रवर्तित कुछ जीवन शैलियाँ यथा- विवाह से पूर्व गोहिया-गोहण (प्रेमी-प्रेमिका) बनकर शारीरिक संबंध स्थापित करना, विधवा हुई स्त्री द्वारा उसी घर में दूसरा पति लाना तथा सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करना एवं गृहस्वामिनी बनना, माता की मृत्यु बाद उसकी अस्थि (फूल) एक छोटे कुंभ में रखकर 'पूर्वज' हितरक्षक मातृदेवी के रूप में स्थापना करना, महामार्गी पाट के उत्सव, समय स्त्री को गुरु के स्थान पर स्थापित करना तथा उसके आदेश धर्मसभा को मानना, यथा-इन्यादि सामाजिक-धार्मिक बातें पूर्वकाल में इस समाज के मातृसत्तात्मक समाज होने की गवाही प्रस्तुत करती है। उनकी मातृसत्तात्मक जीवनरीति, जीवनदर्शन-धर्मदर्शने से आधिर्मूत वर्तमान में गाये जाते नायिका प्रधान राम-सीत मानी वारता, भारथ जैसे मौखिक महाकाव्यों और तोलीरोणी, रूपांरोणी (रूपारानी) जैसे लोकाख्यानों के विधायक परिवल या सृजन-स्रोत हैं। अत: भील समाज में प्रचलित भीली रामायण- राम-सीता मानी वारता राम की महत्ता का नहीं, परन्तु सीता के आत्म-परिचय का मौखिक महाकाव्य है।

राम-सीता मानी वारता में आते पात्रों-चरित्रों के चरणचिन्ह वैदिक-प्राक्-वैदिक युग तक जाते हैं। वेदों में सीता कृषि की अधिष्ठात्री देवी मानी गई है। कषि की अधिष्ठात्री दे ?वी के रूप में सीता का उल्लेख चतुर्थ मंडल के सत्तानवें सूक्त के छठे और सातवें मंत्र में मिलता है। आदिवासी पुराकथाओं (मिक्स-मिथकों) और मौखिक महाकाव्यों की रचना तब हुई जब आदि मानव (प्रागैतिहासिक मानव) और प्रकृति के बीच विभाजक रेखाएं स्पष्ट नहीं थीं। दोनों एक सार्वभौम जीवन में सहभागी थे एवं दोनों एक-दूसरे में ओतप्रोत थे। अत: राम-सीता मानी वारता में प्रकृति और मानव के घनिष्ट तादात्म्य के दर्शन होते हैं। इसमें सीता और कैकेयी जैसे प्रमुख स्त्री चरित्र नाग जैसे जलचर-भूचर तत्त्वों से, हनुमान जैसे पुरुष चरित्र वानर जैसे प्राकृतिक तत्वों तथा मातृसत्तात्मक जीवन की यौन स्वतंत्रता से आविर्भूत हुए हैं।

पाताल लोक के सरोवर में खीले कमल पर भगवान का तेजस गिरता है। वासुकी नाग की रानी कका पदमणी (कैकेयी) पूर्ण विकसित कमल को सूंघती है। भगवान का तेजस नागिन के उदर में जाता है। अत: अयोनिजा सीता का जन्म होता है। शिवजी का तेजस बांस की नलिका में भरकर भगवान अपनी शिष्या अंजनी के कान में फूंकते हैं। तेजस उदर में प्रविष्ट होता है और अयोनिज हनुमान अंजनी के सिर से अविर्भूत होते हैं।

भील लोकमहाकाव्य में रावण, जनक, दशरथ और वासुकी के राजवंश पूर्वकालीन (प्राचीन) समाज के सामान्य परिवार हैं। इन परिवारों का कृषि युग के साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। कृषि संलग्न ऐसे परिवारों में कन्या जन्म सही अर्थ में आनन्द पर्व होता है।

सामान्य ग्रामजन की तरह धोबी के साथ गंगा स्नान करने गए जनक राजा गंगाजल में पलना देखते हैं। नि:संतान जनक राजा पलने में कन्या के दर्शन करते ही हर्षित होते हैं। गंगा किनारे कन्या का स्वागत करने के लिए रानियों और नगरजनों को आमंत्रित करते हैं। भाल पर कुंकुम-अक्षत का तिलक करके सुवर्णरथ में विराजित करके सीता को नगरजनों के साथ राजमहल में लाते हैं। यहाँ स्त्री-पुरुष लिंग भेद या राजा-प्रजा के बीच कोई सामाजिक विभाजक भेद रेखा नहीं है। कन्या को अच्छी तरह से पालने के लिए प्रजाजन भी राजा को सलाह-सूचना दे सकते हैं। यहाँ एक पूर्वकालीन और समतावादी समाज के दर्शन होते हैं। यहाँ राजा भी प्रजाजन जैसे ही हैं।

सीता राजकुमारी होते हुए भी ग्रामकन्या की तरह ही व्यक्त होती है। वह अपने किसानों को पाथेय (कलेवा) देने के लिए पंछी की तरह गाती-नाचती हुई बन में से गुजरती हुई खेत में जाती है और किसानों को गेहूँ-गुड़-घी का चूरमा भर पेट खिलाती है। उसका एक नाम फूलवती भी है। किसी भी प्रकार के पारिवारिक, सामाजिक, राजकीय या आर्थिक दबाव के बिना सीता का व्यक्तित्व बनफूल की तरह विकसित होता है। उसका यौवन जलप्रपात की तरह पूरे जोश के साथ प्रगट होता है। यह यौवन सहज जोश लंका आवास तक अनर्गल टिकता है।

यहाँ भी वाल्मीकीय रामायया की तरह अपनी वीर्यशुल्का (वारांगना), सुलक्षणा और सौंदर्यशालिनी कन्या पराक्रम से ही प्राप्त हो ऐसे उद्देश्य से जनक राजा स्वयंवर का आयोजन करते हैं और माणक चौक में रखे धनुष को उचकने के लिए राजा-राजकुमारों को आमंत्रित करते हैं। दर्प के साथ खड़े हुए रावण की उंगलियां धनुष के नीचे आने से छिपकली जैसी हो जाती हैं। यहाँ सीता हरण के मूल में सुर्पणखा का नाक-कान छेदन नहीं है लेकिन धनुष उचकने में निष्फल रावण की राज सभा में की गई दिल्लगी और तेजोवध है।

राम-सीता मानी वारता में राम-लक्ष्मण के बन गमन का प्रसंग प्रथम आता है। राम अपना धनुष्य जनक राजा के खेत में भूल आते हैं। किसानों को कलेवा देने गई सीता की चूनरी के पल्लू में धनुष्य का एक सीरा लग जाता है। अत: सीता के पीछे घसीटता हुआ सहज रूप में जाने लगता है। जनकपुरी में आकर सीता राम के धनुष्य को माणक चौक में रख देती है। जनकपुरी में राम अपने ही धनुष्य का भंग करके सीता के साथ विवाह रचाते हैं। बन गमन के समय यह प्रसंग बनता है। अत: अयोध्या का एक भी निवासी राम-सीता के विवाह महोत्सव में सह ?भागी या साक्षी नहीं हो सका है। कृषियुग की प्रकृति प्रेमी यह कन्या (सीता) अपने पिता के पास से कन्यादान में सोना-चाँदी- माणिक नहीं माँगती किन्तु बन में हरा बाग रचाने के लिए पेड़-पौधे के बीज मांगती है।

बन में सीता के व्यक्तित्व में गृहसंसार का ज्ञान, व्यवहार, कुशलता, स्पष्टवादिता, सत्यप्रियता और निडरता के दर्शन होते हैं। पति से अलग स्वतंत्र मत प्रदर्शित करने की हिम्मत भी अनेक बार व्यक्त हुई है। वह वाल्मीकि या तुलसी की तरह राम की अनुचरी नहीं है, परन्तु सहचरी है। मायके जनकपुरी में सीता का चरित्र पिता के व्यक्तित्व के प्रभाव के बिना सहज रूप में निखरा है। अत: बन में भी पितृ ?सत्तात्मक परिवार के दो पुरुष होते हुए भी सीता के स्वतंत्र व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं।

राम बन में और जीवन में भी, सीता-लक्ष्मण को आवश्यकता हो तो ही सहयोग देते हैं। झोंपड़ी बनाते समय सीता और लक्ष ?मण परिश्रम से थक जाते हैं तथा भूखे हो जाते हैं तब कहने पर ही बनफल लेने जाते हैं। राम अंतरमुखी होने से व्यावहारिक जीवन की बहुत सी प्रवृत्तियों से अलिप्त रहते हैं। वे भील आदिवासियों के अहंशून्य महामार्गी साधु जैसे लगते हैं। पूरी राम-सीता मानी वारता में राम दो बार ही आवेश का अनुभव करते हैं। एक बार, मृग ने सीता के हरे बाग का नाश किया तब सीता ने राम को आलसी का उपालंभ दिया। अत: क्रोधित होकर राम हाथ में धनुष्य-बाण लेकर मृग को मारने चल पड़े। दूसरी बार लव-कुश को उनके पिता के बारे में पूछने पर अवांच्छित उत्तर मिलने पर दोनों भाइयों को युद्ध के लिए ललकारते हैं। पूरी भील आदिवासी रामायण में सीता और लक्ष्मण के चरित्र ज्यादा सक्रिय एवं कर्मशील हैं।

दसवां ग्रह के उकसाने से सीता का हरण करने वाले रावण का वध अकर्मणीय राम नहीं परन्तु लक्ष्मण करते हैं। लक्ष ?मण मंदोदरी का छद् ?मवेश लेकर रावण की मृत्यु का रहस्य जान लेते हैं। रावण के प्राण आकाशगामी सूर्य देवता के रथ में विराजित भौंरे में हैं। जिस व्यक्ति ने बारह वर्ष के समयखण्ड तक ब्रह्मचर्य का पालन किया हो वह व्यक्ति उबलते तेल की कड़ाई के दोनों छोर पर खड़े रहकर मध्याह्न के समय भौंरे का प्रतिबिम्ब तेल में पड़ने पर धनुष्य पर बाण का संधान करके भौंरे को तेल में गिराए तब ही रावण की मृत्यु हो सकती है एवं पृथ्वी पर से अहंकार का नाश हो सकता है। इस कठोर कार्य को लक्ष्मण अनेक बाधाओं का सामना करके पूर्ण करते हैं। इसका हृदयस्पर्शी वर्णन भील साधु तंबूर या सांग नामक चर्म वाद्य पर नृत्य के साथ गाकर करता है। अत: श्रोताजन वीर रस में तन्मय हो जाते हैं।

भील साधु का मानना है कि बारह वर्ष बन में बनफूल खाकर ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले लक्ष्मण में जो शौर्य था वह शौर्य गृहस्थी राम में नहीं था। अत: लक्ष्मण रावण को मारने में शक्तिमान बनते हैं। महामार्गी साधनापंथ की आध्यात्मिक वाणी में कहना है तो कह सकते हैं कि राम तो पहले से ही साधु थे किन्तु लक्ष्मण साधनापंथ में आगे बढ़ने के लिए रावण के रूप में रहे अपने ही अहंकार का वध करते हैं। भील साधु गाता है- 'योद्धा सोया, अहंकार की मृत्यु हुई!'

लंकागढ़ में रावण के बाग में नाभि तक पत्थर में समाहित और हाथ में माला लेकर राम का नाम रटती सीता का अनन्य भक्तिरूप पावनकारी है। सीता मिलन समय पर राम वाल्मीकीय रामायण की तरह सीता का अपमान नहीं करते। न ही तो नये श्रृंगार सज के आने का संदेशा भेजते। वे स्वयं सीता के पास जाते हैं। उस समय राम सीता के शील-चारित्र्य या रावण के व्यवहार-वर्तन के बारे में एक भी प्रश्न नहीं करते। पवित्र शील सिद्ध करने के लिए अग्नि परीक्षा भी नहीं लेते। भीली रामायण में राम सीता को दु:ख हो ऐसा एक भी शब्द नहीं उच्चारते। आरम्भ में संशय ग्रस्त लक्ष्मण भी आश्वासन देकर सीता के नाभि तक के पत्थर लेने में राम को मदद करते हैं। राम पूरे सम्मान के साथ सीता को मिलते हैं।

भीली रामकथा में अयोध्या जाने के बाद नगरजन नहीं तो सीता के चारित्र्य के बारे में शंका-कुशंका करते और नहीं राम सीता का त्याग करते। संयुक्त परिवार में माता कौशल्या का वर्चस्व है। कौशल्या सीता के चारित्र्य पर संशय करती है।

अत: सास और बहू के बीच झगड़ा होता है। कौशल्या के आदेश से लक्ष्मण सीता को बन में छोड़ आते हैं। मातृसत्तात्मक समाज में परिवार पर माता का ही प्रभाव होता है। बन में हम जिसको क्रूर-घातकी प्राणी समझते हैं, वह बाघ सीता को धर्म की बहिन बनाकर, अपनी पीठ पर बैठा के सप्तर्षि के आश्रम में छोड़ आता है। यहाँ प्रकृति तत्व और मानव समान भूमिका पर जीते हैं। सप्तर्षि के आश्रम (यहाँ वाल्मीकि का आश्रम नहीं है) में सीता के दो पुत्र, लव-कुश का जन्म होता है।

बाद में कौशल्या को अपनो गलती का ख्याल आता है। अत: राम-लक्ष्मण के साथ अयोध्या आ रही सीता का कुंकुम-अक्षत से स्वागत करती है। सुवासित पुष्पमालाओं से शोभित सुवर्ण रथ में दोनों पुत्रों-लव-कुश के साथ विराजित करके नगरज ?नों के साथ सीता को राजमहल में लाती है। राजमहल में राम-सीता का सुखमय दांपत्य जीवन आरंभ होता है।

पहले से ही वीतरागी राम अयोध्या की राजगद्दी पर विराजित नहीं होते। वे भरत और शत्रुघ्न को राजगद्दी सौंपकर सीता और लक्ष्मण के साथ दु:खी जनों के दु:ख दूर करने के लिए जग प्रदक्षिणा करने निकलते हैं।

राम-सीता मानी वारता का प्रत्येक स्त्री-पात्र-चरित्र व्यक्ति है। उनका कहीं भी वस्तु या पुरुष की संपत्ति के रूप में चित्रण नहीं हुआ है। वे अपने निज के व्यक्तित्व से विभूषित हैं। पुरुष की प्रभुता-शक्ति सत्ता से एक भी स्त्री चरित्र आक्रांत नहीं है। पुरुष भूल करते हैं तो वे पथप्रदर्शक भी बनते हैं। स्त्री चरित्र भी पुरुष की समान भूमिका पर जीवन जीते हैं। भीली रामायण 'राम-सीता मानी वारता' राम की महत्ता का महाकाव्य नहीं है, किन्तु सीता के आत्मपरिचय का लोक महाकाव्य है।

नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने

राजनाथसिंह, अमित शाह, नितिन गडकरी, निर्मला सीतारमण, एस जयशंकर के मंत्रालय रिपीट

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का रविवार 09 जून को लगातार तीसरी बार राज्यारोहण हुआ जिसमें पिछली सरकार के

अधिकांश वरिष्ठ मंत्रियों को स्थान देने के साथ राजग के घटक दलों के सात नए चेहरों को जगह दी गई है। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन प्रांगण में शाम 7.15 बजे आयोजित एक भव्य समारोह में मोदी और उनकी मंत्रिपरिषद के 71 सदस्यों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। मंत्रिमंडल में जम्मू कश्मीर से लेकर केरल तथा गुजरात से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को स्थान दिया गया है।

नई मंत्रिपरिषद में तीस कैबिनेट, पांच स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री और 36 राज्यमंत्री रखे गए हैं। मोदी 1962 के बाद पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने दो कार्यकाल पूरे करने के बाद लगातार तीसरी बार सरकार बनाने में कामयाबी पाई है। मंत्रिमंडल में भाजपा के चार ऐसे वरिष्ठ नेताओ राजनाथ सिंह, नितिन गडकरी, अमित शाह और जगत प्रकाश नड्डा को शपथ दिलाई गई है जो पार्टी के अध्यक्ष की जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

नई सरकार में तेलुगु देशम पार्टी और जनता दल (यू) को एक-एक कैबिनेट और एक-एक राज्य मंत्री का पद दिया गया है। जनता दल सेकुलर के प्रमुख व कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एच डी कुमारस्वामी तथा हिन्दुस्तानी अवामी मोर्चा के नेता एवं बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी को कैबिनेट मंत्री बनाया गया है। नई मंत्रिपरिषद में पिछली सरकार में मंत्री रहे 21 नाम नहीं हैं जिनमें स्मृति ईरानी, राजीव चंद्रशेखर, नारायण राणे,

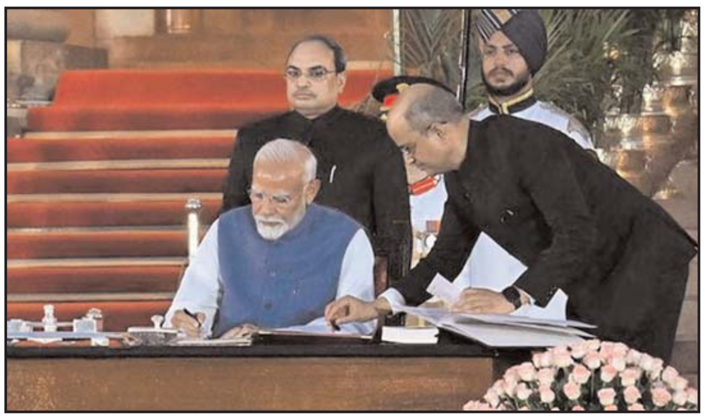

साध्वी निरंजन ज्योति, महेंद्र नाथ पांडेय, जनरल वी के सिंह, अश्विनी चौबे, अर्जुन मुंडा, अजय मिश्रा टेनी व आरके सिंह प्रमुख हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह अब तक का सबसे बड़ा मंत्रिमंडल है। 2014 में 55 मंत्री, 2019 में 58 तो इस बार उन्होंने 71 मंत्रियों के साथ शपथ लेकर जंबो मंत्रिपरिषद का रेकॉर्ड बनाया है। मंत्रिपरिषद में जहां मेरिट का ख्याल रखा है, वहीं जातिगत समीकरणों को भी साधने की कोशिश की गई है। सबसे ज्यादा 27 चेहरे ओबीसी हैं तो दूसरे नंबर पर कोर वोटर माने जाने वाले सामान्य जाति के 21 चेहरों को मंत्री बनने का मौका मिला है। इसी तरह 10 दलित, पांच आदिवासी और पांच अल्पसंख्यकों के जरिए 'सबका साथ सबका विकास' का संदेश देने की कोशिश की गई है। हालांकि, कोई मुस्लिम चेहरा इसमें नहीं है। इस बार 19 वरिष्ठ मंत्री कुर्सी बचाने में सफल रहे। हालांकि चुनाव जीतकर आए चार मंत्री बाहर हो गए।

पिछली बार की तुलना में इस बार मोदी सरकार के पास कुछ ज्यादा ही अनुभवी चेहरे हैं। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान, हरियाणा के पूर्व सीएम मनोहरलाल खट्टर, कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री एचडी कुमारस्वामी और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी जैसे अनुभवी चेहरों से सरकार को लाभ होगा।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की इस तीसरी सरकार में निर्मला सीतारमण और अनुप्रिया पटेल सहित छह महिलाओं को मौका देकर आधी आबादी की भागीदारी सुनिश्चित की गई है। मोदी ने गठबंधन सरकार होने के कारण सहयोगी दलों से 11 चेहरों को मंत्री बनाया है। मध्यप्रदेश के वीरेंद्र कुमार, राजस्थान के गजेंद्रसिंह शेखावत और अर्जुनराम मेघवाल सहित 43 ऐसे चेहरे मंत्री बने हैं जो तीन या उससे अधिक बार सांसद रह चुके हैं।

लोकसभा चुनाव में उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, राजस्थान जैसे राज्यों में भाजपा का प्रदर्शन उम्मीद के अनुरुप नहीं रहा। इसके बावजूद भाजपा ने इन राज्यों का भरपूर ख्याल रखा है। पहले जैसा ही सरकार में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया है।

प्रदेश में भाजपा भले ही सभी 25 सीटें नहीं जीत पाई, लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई कैबिनेट में पहले से भी ज्यादा राजस्थान को तवज्जो मिली है। पिछली बार राजस्थान से 3 मंत्री बनाए गए थे। लेकिन मंत्रिमंडल पुर्नगठन में राज्यसभा सदस्य भूपेन्द्र यादव को भी कैबिनेट मंत्री बनाया गया था।

अब मोदी के तीसरे कार्यकाल में कैबिनेट में चार मंत्रियों को जगह मिली है। इनमें 3 मंत्री रिपीट हुए हैं, वहीं एक नया चेहरा शामिल किया गया है। गजेन्द्र सिंह शेखावत और भूपेन्द्र यादव को कैबिनेट मंत्री तो अर्जुनराम मेघवाल को फिर से राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार के पद की शपथ दिलाई गई है।

अजमेर से सांसद भागीरथ चौधरी को पहली बार कैबिनेट में राज्यमंत्री के रूप में जगह मिली है। पिछली मोदी कैबिनेट में गजेन्द्र सिंह शेखावत जलशक्ति मंत्री तो भूपेन्द्र यादव श्रम एवं रोजगार मंत्री थे। अर्जुनराम मेघवाल कानून एवं न्याय मंत्री और संस्कृति एवं संसदीय कार्यमंत्री थे। तीनों को फिर मंत्री बनाया गया है।

इसी तरह एचडी कुमारस्वामी को स्टील और भारी उद्योग की जिम्मेदारी देकर उनके अनुभवों का लाभ लेने की मंशा दिखाई गई है। सहयोगी दलों के 11 मंत्रियों को जिस तरह से विभाग मिले हैं, उससे स्पष्ट है कि भाजपा नेतृत्व किसी तरह की प्रेशर पॉलिटिक्स में नहीं आया। दो प्रमुख सहयोगियों टीडीपी को नागरिक उड्डयन और जदयू को पंचायतीराज के साथ मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय जैसे अहम मंत्रालय ही मिले हैं।

12 कैबिनेट मंत्रियों को पुराने मंत्रालय एनडीए की तीसरी सरकार में 12 कैबिनेट सहित कुल 20 मंत्रियों को पुराने मंत्रालय मिले हैं। इसमें टॉप-4 में शामिल राजनाथसिंह, अमित शाह, एस जयशंकर और निर्मला सीतारमण को पुरानी जिम्मेदारी फिर से मिली है।

ये सभी नेता पहले की तरह रक्षा, गृह, विदेश और वित्त मंत्रालय चलाएंगे। इसके अलावा देश में सड़कों पर शानदार कार्य का गडकरी को इनाम देते हुए फिर से उन्हें पुराना मंत्रालय दिया गया है। धर्मेंद्र प्रधान, पीयूष गोयल और हरदीप सिंह पुरी को भी क्रमश: शिक्षा, वाणिज्य और पेट्रोलियम मंत्रालय की पुरानी जिम्मेदारी मिली है।

शेखावत सहित कई के मंत्रालय बदले राजस्थान के जोधपुर से सांसद और कैबिनेट मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत से बेहद अहम जलशक्ति मंत्रालय छिन गया और यह जिम्मेदारी गुजरात से पहली बार केंद्रीय मंत्री सीआर पाटिल को मिला है। भूपेंद्र यादव के पास वन एवं पर्यावरण मंत्रालय बरकरार है, लेकिन श्रम एवं रोजगार मंत्रालय मनसुख मंडाविया को दिया गया है।

पिछली बार स्वास्थ्य मंत्रालय देख रहे मंडाविया से यह जिम्मेदारी लेकर जेपी नड्डा को दी गई है। नड्डा मोदी के पहले कार्यकाल में स्वास्थ्य मंत्री रह चुके हैं। पिछली बार नागरिक उड्डयन मंत्री रहे सिंधिया को इस बार दूरसंचार मंत्रालय की कमान मिली है तो ग्रामीण विकास मंत्री रहे गिरिराज सिंह को टेक्सटाइल मिनिस्ट्री की जिम्मेदारी मिली है। प्रहलाद जोशी से कोयला और खनन मंत्रालय लेकर जी किशन रेड्डी को दिया गया है। प्रहलाद जोशी को खाद्य एवं उपभोक्ता के साथ नवीन और नवीकरण ऊर्जा मंत्रालय मिला है।

शपथ समारोह में श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे, मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू, बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना, नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड', मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ, भूटान के प्रधानमंत्री शेरिंग टोबगे और सेशेल्स के उपराष्ट्रपति अहमद अफीक शामिल हुए। समारोह में आठ हजार मेहमानों को आमंत्रित किया गया था। करीब पौने तीन घंटे बाद शपथ ग्रहण कार्यक्रम समाप्त होने के बाद विदेशी मेहमान राष्ट्रपति द्वारा आयोजित राजकीय भोज में शामिल हुए।

किसान निधि के 20 हजार करोड़ जारी :

प्रधानमंत्री मोदी ने सोमवार को तीसरी बार प्रधानमंत्री पद का कार्यभाल संभालने के बाद अपने पहले निर्णय में किसान निधि की 17वीं किस्त जारी वाली फाइल पर हस्ताक्षर किए। इससे 9.3 करोड़ किसानों को फायदा होगा और करीब 20,000 करोड़ रुपए बांटे जाएंगे। फाइल पर हस्ताक्षर करने के बाद मोदी ने कहा कि हमारी सरकार किसान कल्याण के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध सरकार है। इसलिए यह उचित है कि कार्यभार संभालते ही जिस पहली फाइल पर हस्ताक्षर किए जाएं वह किसान कल्याण से संबंधित हो।

मोदी ने कहा कि हम आने वाले समय में किसानों और कृषि क्षेत्र के लिए और भी अधिक काम करते रहना चाहते हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना में शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में तीन करोड़ आवास का निर्माण करने का निर्णय लिया है। प्रधानमंत्री आवास योजना 2015-16 में शुरू की गई थी। इसके अंतर्गत्त 4.21 करोड़ आवास निर्मित हो चुके है। मोदी ने पीएमओ के कर्मचारियों से विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए अपने आप को खपा देने का आह्वान किया और कहा कि हमें ऐसे लोगों की जरूरत है जो दिन-रात एक कर काम कर सकें।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं
मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।